بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 25
Issue - 08

राह-ए-ईमान

अगस्त
2023 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ).....4
5. सम्पादकीय 6
6. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना 7
7. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 2.6.2023).....8
8. मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब का अरब वासियों के प्रति प्यार 12
9. पंजाब और हिन्दुस्तान के समस्त पादरी सज्जनों के लिए फैसले का एक उत्तम तरीक़ा.....15
10. अरबईन नम्बर-2.....21
11. हुज़ूर अनवर से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर.....26
12. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
नूरुद्दीन नूरी
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

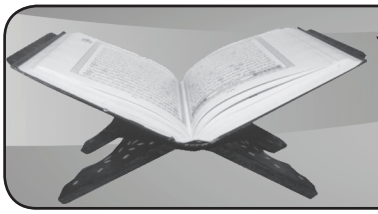

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

وَ لَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ ۚ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَ لَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَ لَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ۫ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ۫ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۷۹﴾

अनुवाद:- 180- और निश्चय ही हमने जहन्नम के लिए जिन्न और इंसानों में से एक बड़ी संख्या को पैदा किया है उन के दिल ऐसे हैं जिनसे वे समझते नहीं, उन की आँखें ऐसी हैं जिनसे वे देखते नहीं। उन के कान ऐसे हैं जिनसे वे सुनते नहीं। वे लोग चौपायों के समान हैं अपितु उन से भी बुरे हैं। (वास्तव में) वे बिल्कुल लापरवाह लोग हैं।

(सूरह आराफ़ - 180)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत हफस बिन आसिम बताते हैं कि मैं अपने चाचा हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर के साथ मक्का के सफर में था। रास्ते में उन्होंने नमाज़ ज़ुहर दो रकअत पढ़ाई इसके बाद वह अपने निवास स्थान पर आए और बैठ गए हम भी आपके साथ आकर बैठ गए। आपने उस तरफ देखा जिधर नमाज़ पढ़ाई थी। आपने देखा कि कुछ लोग नमाज़ पढ़ रहे हैं। आपने पूछा ये लोग क्या कर रहे हैं? मैंने कहा सुन्नतें पढ़ रहे हैं। आपने फरमाया : अगर सुन्नतें पढ़नी थीं तो मैं पूरी नमाज़ पढ़ाता। फरमाया: ए भतीजे! मैं रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सफर करता रहा हूँ आप ने अपने स्वर्गवास तक सफर में दो रकअत फ़र्ज़ से अधिक नमाज़ नहीं पढ़ी। मैं अबू बकर के साथ सफर में रहा हूँ उन्होंने भी कभी दो रकअत फर्ज़ से अधिक नमाज़ नहीं पढ़ी जब तक कि उनका देहांत हो गया। उमर के साथ सफर पर रहा हूँ आप ने भी अपने देहांत तक कभी दो रकअत फर्ज़ से अधिक नमाज़ नहीं पढ़ी। फिर उसमान के साथ सफर करता रहा हूँ उन्होंने भी अपने देहांत तक इसी पर अमल किया। अल्लाह तआला का इरशाद है कि तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदर्श ही सबसे अच्छा नमूना है। (और यही सुन्नत है जिसका हर मुसलमान को पालन करना चाहिए)

(मुस्लिम किताबुस्सलात)

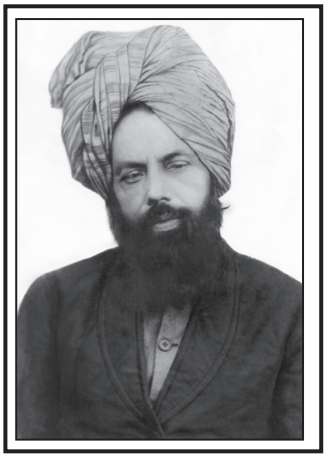

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

पथरी निकालने का नुस्खे

इस समय आप अलैहिस्सलाम आए और कुछ देर सभा आयोजित हुई। कभी-कभी मूत्राशय में पथरी दर्द का कारण बनती है और पेशाब के रूप में बाहर आती है।

इस के बारे में फरमाया कि :

इसके लिए निराबसी 3 रति और व्यानम अपिकाक का प्रयोग अत्यंत उपयोगी है तथा चावल आदि लेसदार वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए। यह लेस जम कर कंकर बन जाता है।

फिर फरमाया कि: मेरे पिता जी को भी यह बीमारी रही है वह सिबर की गोलियों का प्रयोग करते थे। इसमें सीबर, सुहागा, बज़रालंज, काली मिर्च और दार मिर्च आदि औषधियां होती हैं जो बहुत उपयोगी होती हैं।

सहाबा किराम के अद्वितीय आदर्श

जेहलम के मुक़द्दमे के बारे में फरमाया कि :-

ख़ुदा की ओर से जो मालूम होता है वह हो कर ही रहता है। साधन क्या चीज़ है कुछ भी नहीं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरे मार्ग में जाओगे तो مُرٰغَمًا كَثِيْرًا पाओगे। अच्छी नियत से जो क़दम उठाता है ख़ुदा उसके साथ होता है बल्कि यदि मनुष्य बीमार होता है तो उसकी बीमारी दूर हो जाती है। सहाबा के आदर्श देख लो वस्तुत: सहाबा किराम के आदर्श ऐसे हैं कि समस्त नबियों के उदाहरण हैं। ख़ुदा को तो कर्म ही प्रिय हैं। उन्होंने बकरियों के समान अपने प्राण दिए और उनका उदाहरण ऐसा है जैसे नबुव्वत का एक रूप आदम से लेकर चला आता था और समझ में नहीं आता था लेकिन सहाबा किराम ने चमका कर दिखा दिया और बता दिया कि सच्चाई और वफ़ादारी इसे कहते हैं। हज़रत ईसा की तो दशा ही मत पूछिए। मूसा को किसी ने न बेचा परंतु ईसा को उनके हवारियों ने तीस रुपये लेकर बेच दिया पवित्र कुरआन से सिद्ध होता है कि हवारियों को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की सच्चाई पर संदेह था। तभी तो माइदा मांगा और कहा وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا (अल माईदा-114) ताकि तेरा सच्चा होना औरर झूठा होना सिद्ध हो जाए। इस से ज्ञात होता है कि माईदा के उतरने से पूर्व उनकी अवस्था "नअलमा" की न थी फिर जिस व्याकुलता का जीवन उन्होंने व्यतीत किया उसका उदाहरण कहीं नहीं पाया जाता। सहाबा किराम का गिरोह अजीब गिरोह, प्रशंसा योग्य तथा अनुकरण योग्य गिरोह था। उनके हृदय विश्वास से ओत-प्रोत थे जब विश्वास होता है तो धीरे-धीरे सर्वप्रथम धन देने को जी चाहता है फिर जब बढ़ जाता है तो विश्वास करने वाला ख़ुदा के लिए जान देने को तैयार हो जाता है। (मल्फ़ूज़ात जिल्द-4)

★ ★ ★

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

तीसरे प्रश्न का उत्तर...

इन आयतों का अगला पिछला प्रसंग देखो कि इस स्थान पर दूरदर्शिता पूर्ण अनुसंधान का कुछ वर्णन भी है केवल एक व्यक्ति के लम्बे भ्रमण का वर्णन है और इन बातों के वर्णन करने से इसी अर्थ का सिद्ध करना अभीष्ट है कि वह ऐसे ग़ैर आबाद स्थान पर पहुंचा। तो इस स्थान पर भौतिकी की समस्याएं ले बैठना बिलकुल बे मौक़ा नहीं तो और क्या है? उदाहरणतया यदि कोई कहे कि आज रात बादल इत्यादि से आकाश ख़ूब साफ़ हो गया था और सितारे आकाश के बिन्दुओं की तरह चमकते हुए दिखाई देते थे तो इस से यह झगड़ा ले बैठें कि क्या सितारे बिन्दुओं के समान हैं और भौतिकी की पुस्तकें खोल-खोल कर प्रस्तुत करें तो निस्सन्देह यह हरकत अनभिज्ञ की सी हरकत होगी क्योंकि उस समय बात करने वाले की नीयत में वास्तविक बात का वर्णन करना अभीष्ट नहीं वह तो केवल अवास्तविक तौर पर जिस प्रकार समस्त संसार बोलता है बात कर रहा है। हे वे लोगों जो इशा-ए-रब्बानी में मसीह का लहू पीते और गोश्त खाते हो क्या अभी तक तुम्हें मजाज़ात (अवास्तविकताओं) तथा रूपकों का ज्ञान नहीं? सब जानते हैं कि प्रत्येक देश की सामान्य बोल-चाल में अवास्तविकताओं और रूपकों के प्रयोग का अत्यन्त विशाल द्वार खुला है और ख़ुदा तआला की वह्यी उन्हीं मुहावरों और रूपकों को जो सादगी से जन सामान्य ने अपनी दैनिक बातचीत और बोल-चाल में ग्रहण कर रखे हैं। दर्शनशास्त्र की बारीक परिभाषाओं का हर स्थान और हर महल में अनुकरण करना वह्यी की पद्धति नहीं क्योंकि बात का मुख जन सामान्य की ओर है। अत: अवश्य है कि उनकी समझ के अनुसार और उनके मुहावरों की दृष्टि से बात की जाए वास्तविकताओं और सूक्ष्म बातों का वर्णन करना स्वयं है परन्तु मुहावरों का छोड़ना तथा अवास्तविकताओं और सामान्य रूपकों से सहसा पृथक होना ऐसे व्यक्ति के लिए कदापि वैध नहीं जो जन सामान्य से मज़ाक पर बात करना उसके पद का कर्त्तव्य है ताकि वह उसकी बात को समझें और उनके दिलों पर उसका प्रभाव हो। इसलिए यह मान्य है कि कोई ऐसी इल्हामी किताब नहीं जिसमें अवास्तविकताओं और रूपकों से पृथकता की गई हो या पृथक होना वैध हो। क्या ख़ुदा तआला का कोई कलाम दुनिया में ऐसा भी आया है? यदि हम विचार करें तो हम स्वयं अपनी दैनिक बोल-चाल में सैकड़ों अवास्तविक बातें और रूपक बोल जाते हैं और कोई भी उन पर ऐतराज़ नहीं करता। उदाहरणतया कहा जाता है कि हिलाल बाल सा बारीक है और सितारे बिन्दुओं की तरह है या चाँद बादल के अन्दर छुप गया और सूर्य अभी तक जो एक पहर दिन चढ़ा है नेज़ा (भाला) भर ऊपर आया है या हम ने एक प्लेट पुलाव की खाई या एक प्याला शर्बत का पी लिया। तो इन सब बातों में किसी के दिल में यह धड़का शुरू नहीं होता कि हिलाल क्योंकर बाल सा बारीक हो सकता है और क्या सूर्य ने अपनी उस तीव्र गति के बावजूद

जिस से वह हज़ारों कोस एक दिन में तय करता है एक पहर में केवल नेज़े के बराबर इतनी दूरी करता है और न पुलाव की प्लेट खाने या शरबत का प्याला यह कोई सोच सकता है कि प्लेट या प्याले को टुकड़े-टुकड़े कर के खा लिया होगा। अपितु यह समझेंगे कि जो उनके अन्दर चावल और पानी है वही खाया-पिया होगा। अत्यन्त स्पष्ट बात पर ऐतराज़ करना कोई बुद्धिमान विरोधी भी पसंद नहीं करता। न्यायप्रिय ईसाइयों से हमने स्वयं सुना है कि ऐसे-ऐसे ऐतराज़ हम में से वे लोग करते हैं जो अनभिज्ञ या कट्टर पक्षपाती हैं।

भला यह क्या सत्य आचरण है? कि यदि ख़ुदा के कलाम में मजाज़ या रूपक के रंग पर कुछ आए तो उस वर्णन को वास्तविकता पर चरितार्थ कर के ऐतराज़ का स्थान बनाया जाए। इस स्थिति में कोई इल्हामी किताब भी ऐतराज़ से नहीं बच सकती। जहाज़ में बैठने वाले और अग्निबोट पर सवार होने वाले प्रतिदिन यह तमाशा देखते हैं कि सूर्य पानी में से ही निकलता है और पानी में ही अस्त होता है तथा सैकड़ों बार आपस में जैसा कि देखते हैं बोलते भी हैं कि वह निकला और वह अस्त हुआ। अब स्पष्ट है कि इस बोल-चाल के समय में भौतिक शास्त्र के दफ्तर उनके आगे खोलना और सूर्य की व्यवस्था की समस्या ले बैठना जैसे यह उत्तर सुनना है कि हे पागल! क्या यह ज्ञान तुझे ही मालूम है हमें मालूम नहीं।

ईसाई साहिब ने पवित्र क़ुर्आन पर ऐतराज़ किया परन्तु इन्जील के वे स्थान जिन पर निश्चित और वास्तविक ऐतराज़ होता है भूले रहे। उदाहरणतया बतौर नमूना देखो कि इन्जील मती व मरक़स में लिखा है कि मसीह को उस समय आसमान से अल्लाह की प्रजा की अदालत के लिए उतरता देखोगे जब सूर्य अन्धकारमय हो जायेगा और चन्द्रमा अपना प्रकाश नहीं देगा तथा सितारे आकाश से गिर जायेंगे। अब भौतिकी का ज्ञान ही यह आपत्तियां प्रस्तुत करता है कि क्योंकर संभव है कि समस्त सितारे पृथ्वी पर गिरें और सब टुकड़े-टुकड़े होकर पृथ्वी के किसी कोने में जाकर गिर पड़ें और बनी आदम को उनके गिरने से कुछ भी हानि या कष्ट न पहुंचे और सब ज़िन्दा और सुरक्षित रह जाएँ हालाँकि एक सितारे का गिरना भी पृथ्वी निवासियों की तबाही के लिए पर्याप्त है फिर यह बात भी विचारनीय है कि जब सितारे पृथ्वी पर गिर कर पृथ्वी वालों को उनके अस्तित्व से बे निशान समाप्त करेंगे तो मसीह का यह कथन कि तुम मुझे बादलों में आकाश से उतरता देखोगे क्योंकर सही होगा? जब लोग हज़ारों सितारों के नीचे दबे मरे पड़े होंगे तो मसीह का उतरना कौन देखेगा? और पृथ्वी जो सितारों के आकर्षण से खड़ी और यथावत है क्योंकर अपनी सही हालत पर स्थापित और खड़ी कैसे रहेगी और मसीह किन चुने हुए लोगों को (जैसा कि इन्जील में है) दूर-दूर से बुलाएगा और किन को डांट-डपट और चेतावनी देगा क्योंकि सितारों का गिरना तो स्पष्ट तौर पर सामान्य फ़ना और सामान्य मौत के लिए अनिवार्य है अपितु पृथ्वी के तख्ते के इन्किलाब का कारण होगा। अब देखिये कि यह सब वर्णन भौतिक शास्त्र के विपरीत हैं या नहीं? ऐसा ही एक और ऐतराज़ भौतिक शास्त्र की दृष्टि से इन्जील पर होता है और वह यह है कि इन्जील मती में देखो वह सितारा जो उन्होंने (अर्थात् अग्निपूजकों ने) पूरब में देखा था उनके आगे-आगे चल रहा और उस स्थान के ऊपर जहाँ वह लड़का था जाकर ठहरा (मती अध्याय 2 आयत 9) (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ 51-55)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय

मसीह मौऊद[अ०] के आने का उद्देश्य

प्रिय पाठको ! आज से लगभग 150 साल पहले जब देश में ईसाई धर्म का बोलबाला था अहमदिया मुस्लिम जमात के संस्थापक लिखते हैं : याद रखो मेरे आगमन के दो उद्देश्य हैं। एक यह कि जो विजय इस समय इस्लाम पर अन्य धर्मों की हुई है जैसे वे इस्लाम को खाते जाते हैं और इस्लाम अत्यन्त कमज़ोर और अनाथ बच्चे के समान हो गया है। अत: इस समय ख़ुदा तआला ने मुझे भेजा है ताकि मैं इस्लाम को अपनी मूल आस्थाओं को छोड़ चुके धर्मों के आक्रमणों से बचाऊं और इस्लाम के ज़ोरदार तर्कों तथा सच्चाइयों के प्रमाण प्रस्तुत करूं। और वे प्रमाण ज्ञान संबंधी तर्कों के प्रकाश और आकाशीय बरकतें हैं जो हमेशा से इस्लामी समर्थन में प्रकट होते रहे हैं। इस समय यदि तुम पादरियों की रिपोर्टें पढ़ो तो ज्ञात हो जाएगा कि वे इस्लाम के विरोध के लिए क्या उपाय कर रहे हैं। और उनका एक एक अखबार कितनी संख्या में प्रकाशित होता है। ऐसी हालत में आवश्यक था कि इस्लाम का बोलबाला किया जाता। अत: इस उद्देश्य के लिए ख़ुदा तआला ने मुझे भेजा है। और मैं निश्चित तौर पर कहता हूं कि इस्लाम की विजय होकर रहेगी और इसके लक्षण प्रकट हो चुके हैं। हां यह सच्ची बात है कि इस विजय के लिए किसी तलवार और बन्दूक़ की आवश्यकता नहीं और न ख़ुदा तआला ने मुझे हथियारों के साथ भेजा है। ...धर्म का उद्देश्य दिलों पर विजय प्राप्त करना होता है और यह उद्देश्य तलवार से प्राप्त नहीं होता। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो तलवार उठाई मैं कई बार बता चुका हूं कि वह तलवार केवल आत्मरक्षा और बचाव के तौर पर थी और वह भी उस समय जबकि विरोधियों और इन्कारियों के अत्याचार हद से गुज़र गए थे और असहाय मुसलमानों के ख़ून से धरती लाल हो चुकी। अत: मेरे आगमन का उद्देश्य तो यह है कि इस्लाम की विजय दूसरे धर्मों पर हो।

दूसरा कार्य यह है कि जो लोग कहते हैं कि हम नमाज़ पढ़ते हैं और यह करते हैं और वह करते हैं यह केवल जीभों पर हिसाब है। इसके लिए आवश्यकता है कि वह हालत मनुष्य के अन्दर पैदा हो जाए जो इस्लाम का सार और मूल है। मैं तो यह जानता हूं कि कोई व्यक्ति मोमिन और मुसलमान नहीं बन सकता जब तक अबू बक्र, उमर, उस्मान, अली जैसा रंग पैदा न हो। वे दुनिया से प्रेम नहीं करते थे अपितु उन्होंने अपने जीवन ख़ुदा तआला के मार्ग में समर्पित किए हुए थे। ...मैं सच-सच कहता हूं कि तुम केवल छाल और छिलके पर सन्तुष्ट हो गए हो हालांकि यह कुछ चीज़ नहीं है ख़ुदा तआला गूदा चाहता है।

अत: ये वे बातें हैं जिन के लिए मैं भेजा गया हूं इसलिए मुझे झुठलाने में जल्दी न करो अपितु ख़ुदा तआला से डरो और तौब: करो क्योंकि तौब: करने वाले की बुद्धि तेज़ होती है। (लेक्चर लुधियाना पृष्ठ 62-66)

अल्लाह तआला से दुआ करनी चाहिए कि वह संसार का सही मार्ग दर्शन करे और वे समय के सुधारक को स्वीकार करने वाले हों। आमीन

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना

महासिने क़ुरआने करीम

है शुक्रे रब्बे अज़्ज़-व-जल[1] ख़ारिज बयाँ[2]
जिस की कलाम[3] से हमें उस का मिला निशाँ
वो रौशनी जो पाते हैं हम इस किताब में
होगी नहीं कभी वो हज़ार आफ़ताब[4] में
उस से हमारा पाक दिलओ सीना हो गया
वो अपने मुँह का आप ही आईना हो गया
उस ने दरख़्ते दिल को मआरिफ़[5] का फल दिया
हर सीना शक से धो दिया, हर दिल बदल दिया
उस से ख़ुदा का चेहरा नमूदार[6] हो गया
शैताँ का मकर[7] ओ वस्वसा[8] बेकार हो गया
वो रह जो ज़ाते अज़्ज़ वो जल को दिखाती है
वो रह जो दिल को पाको मुतह्हर[9] बनाती है
वो रह जो यारे गुम शुदा[10] को खींच लाती है
वो रह जो जामे[11] पाक यक़ीं[12] का पिलाती है
वो रह जो उस के होने पे मुहकम[13] दलील है
वो रह जो उस के पाने की कामिल सबील[14] है
उस ने हर एक को वही रस्ता दिखा दिया
जितने शकूक ओ शुब्हा[15] थे सब को मिटा दिया
अफ़सुदगी[16] जो सीनों में थी दूर हो गई
ज़ुल्मत[17] जो थी दिलों में वो सब नूर हो गई
जो दौर था ख़िज़ाँ[18] का वो बदला बहार से
चलने लगी नसीम[19] इनायते यार से
जितने दरख़्त ज़न्दा थे वो सब हुए हरे
फल इस क़दर पड़ा कि वो मेवों से लद गए

1. सम्मान वाला। 2. वर्णन से बाहर। 3. क़ुरआन मजीद। 4. सूर्य। 5. ज्ञान। 6. प्रकट। 7. धोखा। 8. चालबाज़ी। 9.पवित्र। 10. भटका हुआ मित्र। 11. पवित्र जाम। 12. विश्वास। 13. वश्वसनीय। 14. सत्य मार्ग। 15. शंका। 16. निराशा। 17. अंधेरा। 18. पतझड़। 19. ठण्डी हवा।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 2.6.2023 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

बदर की लड़ाई के संदर्भ में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जीवन परिचय एवं ऐतिहासिक घटनाओं का ईमान वर्धक वर्णन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- मैं बदरी सहाबियों के जीवन परिचय तथा बलिदानों के विषय में सम्बोधनों की एक श्रंख्ला बयान करता रहा हूँ। अनेक लोगों ने यह अभिलाषा व्यक्त की तथा मुझे लिखा कि यदि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत न बयान की जाए तो प्यास रह जाएगी क्यूँकि मूलतः केन्द्र तो आप स. की ज़ात थी जिसके चारों ओर सहाबी घूमते थे, जिसके साथ जुड़ कर सहाबियों ने क़ुर्बानियाँ करने के अदभुत उदाहरण प्राप्त किए तथा नए नए अंदाज़ सीखे और तौहीद को फैलाने तथा स्वयं उसका नमूना बनने के वे स्तर कायम किए जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दिव्य शक्ति और अल्लाह तआला के विशेष प्रिय होने का प्रमाण है। अतः आप स. की सीरत का बयान भी अनिवार्य है।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन परिचय के विभिन्न आयामों पर पिछले कुछ समय में ख़ुत्बे दिए भी गए हैं परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत ऐसी है कि जिसे सीमित नहीं किया जा सकता। एक एक गुण ऐसा है कि जिसको कई कई ख़ुत्बों में भी नहीं समेटा जा सकता। यह सीरत इन्शाअल्लाह समय समय पर बयान भी होती रहेगी अपितु हर एक ख़ुत्बः एवं हर एक सम्बोधन में कोई न कोई बात किसी न किसी रंग में बयान होती भी रहती है क्यूँकि यही हमारे जीवन की धुरी है तथा इसके बिना हमारा दीन और हमारा ईमान पूरा नहीं हो सकता तथा अल्लाह तआला की भेजी हुई शरीअत के अनुसार अमल भी नहीं हो सकता। अतएव इस समय मैं बदर की लड़ाई के हवाले से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत एवं इतिहास की घटनाएँ पेश करूँगा और यह श्रंखला आगे के कुछ ख़ुत्बों तक चलेगी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सुन्दर आचरण ही है जिसने सहाबियों को निःस्वार्थ बलिदानों की भावना प्रदान की तथा यह भावना देकर गाज़ियों एवं शहीदों और अल्लाह तआला के प्यारों और अल्लाह

तआला के उनसे प्रसन्न रहने वालों में शामिल फ़रमाया और जिसके नमूने हमने अपने जीवन में देखे। अत: इस युद्ध के संदर्भ में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन परिचय का बयान आवश्यक है। युद्ध की घटनाओं से पहले उन कारणों का बयान करना भी आवश्यक है जिनके कारण युद्ध हुआ। इस लिए पहले मैं कुछ न कुछ भूमिका बयान करूँगा। इस पृष्ट भूमि में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत तथा आपकी लाई हुई सुन्दर शिक्षा के विभिन्न आयाम प्रकट हो जाते हैं।

बदर की लड़ाई के कारण बयान करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. "सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स. में लिखते हैं कि मक्का के काफिरों ने इस्लाम तथा मुसलामनों के विरुद्ध जो अनैतिक व्यवहार एवं योजनाएँ बनाईं वे किसी भी ज़माने तथा क्षेत्र से हट कर दो कौमों में युद्ध छिड़ जाने के लिए पर्याप्त कारण थे। धिक्कार एवं परिहास एवं अपमान जनक व्यवहार के साथ मुसलमानों को एक ख़ुदा की इबादत तथा तौहीद की घोषणा करने से जबरन रोका गया। उन्हें मारा पीटा, उनके धन सम्पत्ति को लूट लिया, उनमें से कुछ लोगों की हत्या की, उनकी महिलाओं को प्रताड़ित किया। जब कुछ मुसलमान हब्शा देश की ओर हिजरत कर गए तो नजाशी के दरबार तक उन मुसलमानों को वापस लाने की लिए पीछा किया। मुसलमानों के सरदार अर्थात आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हर प्रकार के कष्ट दिए गए, ताइफ़ में पत्थर बरसाए गए और अन्तत: मक्का की संसद में समस्त सरदारों की सहमति से यह निर्णय लिया गया कि मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का वध कर दिया जाए। फिर इस रक्तरंजित विज्ञप्ति के अनुसार काम करने के लिए मक्का के युवाओं ने रात के समय आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर पर हमला किया। आप स. सुरक्षित रहे तथा जान बचा कर सौर नामक गुफा में शरण ली। क्या ये समस्त योजनाएँ तथा रक्तरंजित ज्ञापन मक्का के काफिरों की ओर से युद्ध की घोषणा नहीं थी? क्या क़ुरैश के ये अत्याचार मुसलमानों की ओर से बचाव की लड़ाई के लिए पर्याप्त आधार नहीं हो सकते? क्या दुनिया में कोई स्वाभिमानी जाति इन परिस्थितयों के होते हुए इस अल्टीमेटम को स्वीकार कर सकती है जो काफिरों ने मुसलमानों को दिया? निश्चित ही निश्चय ही यदि मुसलमानों की जगह कोई अन्य कौम होती तो वह इससे बहुत पहले काफिरों के विरुद्ध लड़ाई के लिए आतुर हो जाती। किन्तु मुसलमानों को उनके आका व मौला आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से युद्ध का आदेश न था।

जब मक्का में कुछ सहाबियों ने काफिरों के अत्याचार पर प्रतिक्रि या देने की अनुमति चाही तो आप स. ने मना करते हुए फ़रमाया कि मुझे तो क्षमा करने का आदेश दिया गया है।

इस प्रकार अत्याचार सहन करते हुए जब एक लम्बी अवधि व्यतीत हो गई और मुसलमानों को मक्का से निष्कासित होना पड़ा तो ख़ुदा ने मुसलमानों को अपने बचाव के लिए युद्ध की अनुमति प्रदान की। अत: आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजरत क़ुरैश की चेतावनी को कबूल किए जाने का संकेत था तथा इसमें ख़ुदा की ओर से युद्ध की घोषणा का एक गुप्त संकेत था, जिसे काफिर एवं मुसलमान दोनों समझते थे। खेद है कि अत्याचारी क़ुरैश ने इस गुप्त संकेत को न समझा, अन्यथा यदि अब भी काफिर रुक जाते तथा दीन के मामले में बलपूर्वक विरोध से काम लेना छोड़ देते और मुसलमानों को शांति से जीवन व्यतीत करने देते तो

नि:सन्देह उन्हें अब भी क्षमा कर दिया जाता। परन्तु भाग्य का लिखा पूरा होना था और आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजरत ने जलती पर तेल का काम दिया। आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजरत के बाद काफिरों ने जो सबसे पहला काम किया, वह यह था कि वे आपका पीछा करते हुए निकल खड़े हुए तथा सौर नामक गुफा के मुंह पर जा पहुंचे। अल्लाह तआला ने उस अवसर पर आपकी विशेष सहायता फ़रमाई और क़ुरैश की आँखों पर पर्दा डाल दिया। क़ुरैश इस पर भी नहीं रुके तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पकड़ कर लाने वाले के लिए एक सौ ऊँटों के पुरस्कार की घोषणा कर दी। अतएव बीसियों नौजवान आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खोज में निकल खड़े हुए, इस उपाय में भी क़ुरैश को असफलता का मुंह देखना पड़ा।

इसी प्रकार जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना हिजरत कर गए तो मक्का के क़ुरैश ने मदीने के रईस अब्दुल्लाह बिन अबी सलूल और उसके साथियों को एक धमकी भरा पत्र लिखा कि तुमने हमारे साथी को शरण दी है, हम ख़ुदा की कसम खा कर कहते हैं कि या तो तुम उसके साथ जंग करो अथवा उसे अपनी बस्ती से निकाल दो, अन्यथा हम सब एक होकर तुम पर हमला करेंगे तथा तुम्हारे यौद्धाओं की हत्या कर देंगे और तुम्हारी महिलाओं को अपने आधीन कर लेंगे। जब यह पत्र अब्दुल्लाह बिन अबी तथा उसके बुत परस्त साथियों को मिला तो वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जंग करने के लिए एकत्र हो गए। जब आपको इस बात की सूचना मिली तो आप उनसे मिले और उन्हें समझाया और युद्ध से रोका।

इसी प्रकार मक्का के क़ुरैशियों ने सुसंगठित होकर अरब के अन्य क़बीलों को मुसलमानों के विरुद्ध उकसाया तथा युद्ध के लिए तय्यार किया। इसके परिणाम स्वरूप पूरा अरब देश मदीने वालों का दुशमन हो गया तथा यह हाल हो गया कि मदीने के चारों ओर आग ही आग है। स्वयं मदीने के भीतर यह स्थिति थी कि अभी तक औस तथा ख़ज़रज क़बीलों के अन्दर एक विशेष समुदाय शिर्क पर क़ायम था तथा यद्यपि वे प्रत्यक्षत: अपने भाई बन्दों के साथ थे किन्तु ऐसी अवस्था में एक मुशरिक का क्या विश्वास किया जा सकता था। फिर दूसरे नम्बर पर मुनाफिक़ थे जो गुप्त रूप से इस्लाम के दुशमन थे। तीसरे नम्बर पर यहूदी थे जिनके साथ यद्यपि समझौता हो चुका था परन्तु उन यहूदियों की दृष्टि में समझौते का कोई महत्त्व नहीं था। अभिप्राय: यह है कि उस समय मदीने के अन्दर की स्थिति मुसलमानों के विरुद्ध एक बारूद के गुप्त भंडार से कम नहीं थी तथा अरब के क़बीलों की तनिक सी चिंगारी मदीने के मुसलमानों को भक से उड़ा देने के लिए काफ़ी थी। उससे अधिक विकट समय इस्लाम पर कभी नहीं आया। अत: ऐसे समय में आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ख़ुदा की वह्यी अवतरित हुई तथा तलवार के साथ जिहाद का आदेश नाज़िल हुआ।

शक्ति के साथ बचाव के लिए युद्ध करने के विषय में सबसे पहली आयत १२ सिफ़र के महीने, २ हिजरी में नाज़िल हुई। उस समय तक आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मदीना तशरीफ़ लाए लगभग एक वर्ष का समय हो चुका था। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि यह हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. की खोज है। कुछ लेखकों के अनुसार यह आयत हिजरत के तुरन्त बाद नाज़िल हुई थी क्यूँकि हिजरत के तुरन्त बाद ही आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काफिरों के कुछ दलों को रोकने के लिए हथियार बन्द

दल रवाना फ़रमाए थे।

सूर: हज की ये दो आयतें हैं जिनमें तलवार से लड़ाई करने की पहली बार अनुमति दी गई है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उन लोगों को, जिनके विरुद्ध जंग की जा रही है, युद्ध करने की आज्ञा दी जाती है क्यूँकि उन पर अत्याचार किए गए। निश्चित रूप से अल्लाह उनकी सहायता करने पर पूर्णत: सामथ्र्य रखता है। अर्थात वे लोग जिन्हें उनके घरों से अन्यायपूर्वक निकाला गया, केवल इस कारण से कि वे कहते थे कि अल्लाह हमारा रब्ब है। यदि अल्लाह की ओर से लोगों को बचाना उनमें से कुछ लोगों को कुछ के विरुद्ध भिड़ा कर लोगों का बचाव न किया जाता तो मठ, कलीसा, यहूदियों के उपासना गृह तथा मस्जिदें, जिनमें प्राय: अल्लाह का नाम लिया जाता है, ध्वस्त कर दिए जाते। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि यहाँ हर एक धर्म के उपासना गृह का नाम लेकर उसकी सुरक्षा की बात की गई है।

जिहाद अनिवार्य होने के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काफिरों के अत्याचार से मुसलमानों को सुरक्षित रखने के लिए आरम्भिक रूप में चार उपाय धारण किए। पहला यह कि आपने स्वयं यात्रा करके मदीने के आस पास बसने वाली क़ौमों से समझौते किए। दूसरे यह कि आपने छोटी छोटी सूचना भेजने वाली पार्टियाँ मदीने के आस पास के क्षेत्र में भिजवाना शुरु कीं। तीसरे यह कि इन पार्टियों की रवानगी से कमज़ोर मुसलमानों को मदीने आकर मुसलमानों से मिल जाने का अवसर मिल गया। चौथे यह कि आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काफिरों के उन व्यापारिक दलों की रोकथाम शुरु कर दी जो मक्का से शाम देश की ओर आते जाते हुए मदीने के पास से हो कर जाते थे।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने यह क्र म आगे भी जारी रहने का इरशाद फ़रमाने के बाद निम्नलिखित चार मृतकों का सद्गर्णन तथा जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई। १- मुकर्रम ख़्वाजा मुनीरुद्दीन क़मर साहब ऑफ़ यू.के. इनका जनाज़ा मौजूद था। २- डाक्टर मिर्ज़ा मुबश्शिर अहमद साहब, आप हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के पोते तथा डाक्टर मिर्ज़ा मुनव्वर अहमद साहब के बेटे थे। मरहूम हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा रज़ी. के नवासे थे। पिछले दिनों ७९ वर्ष की आयु में आपका निधन हुआ। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। आप वाकिफ़े ज़िन्दगी थे तथा फ़ज़्ले उमर हस्पताल रबवा में लगभग पचास वर्ष सेवा करने का सुअवसर मिला। १९८३ से मृत्यु तक वक़्फ़े जदीद बोर्ड के मेम्बर रहे। मरहूम निर्धनों के सहायक, ख़िलाफ़त से घनिष्ट सम्बंध रखने वाले, ख़ानदान के लोगों के साथ सुन्दर व्यवहार करने की भावना से ओत-प्रोत, बिना भेद भाव सबका नि:स्वार्थ उपचार करने वाले, जमाअत के निज़ाम का आज्ञा पालन करने वाले, नेक स्वभाव के स्वामी थे। ३- सय्यदा अम्तुल बासित साहिबा पतनी सय्यद महमूद साहब ऑफ़ इस्लामाबाद, पाकिस्तान। ४- मुकर्रम शरीफ़ अहमद साहब बन्देशा ऑफ़ अधवाली ज़िला फ़ैसलाबाद। हुज़ूर-ए-अनवर ने समस्त मृतकों की मगफिरत तथा दर्जों की बुलन्दी के लिए दुआ की।

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131

☆ ☆ ☆

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब का नबी के देशवासियों के प्रति प्यार

अनुवादक: फरहत अहमद आचार्य

आप अपनी एक पुस्तक में लिखते हैं : "हे मूल रूप से अरब देश के संयमियो तथा बुज़ुर्ग लोगो! तुम पर सलामती हो। हे नबी के देश के निवासियो और अल्लाह के महान घर के पड़ोसियो! तुम पर सलामती हो। तुम इस्लाम की क़ौमों में से सर्वश्रेष्ठ हो और महान तथा प्रतिष्ठावान ख़ुदा की जमात के सबसे श्रेष्ठ लोग हो। कोई भी क़ौम तुम्हारी शान तक नहीं पहुंच सकती, तुम सम्मान, महानता और प्रतिष्ठा में सबसे आगे बढ़ गए हो। और तुम्हारे लिए यह गर्व ही पर्याप्त है कि अल्लाह ने अपनी वह्यी को आदम से शुरू किया और उस पैगंबर पर समाप्त कर दिया जो तुम में से था, और तुम्हारी भूमि उसकी मातृभूमि और निवास स्थान और उसका जन्मस्थान थी। और सृष्टि के पथप्रदर्शक मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में तुम्हें क्या पता कि वह किस शान के नबी हैं। आप का उपकार हर छोटे-बड़े पर सिद्ध है और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वह्यी ने समस्त वास्तविक अर्थों तथा रहस्यों तथा गंभीर बिंदुओं को स्पष्ट कर दिया है और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के धर्म ने सत्य के वह समस्त ज्ञान तथा सन्मार्ग के तरीक़े जो कि मुर्दा थे उनमें जान डाल दी। हे अल्लाह! ज़मीन में जितनी पानी की बूंदें, धूल के कण, ज़िंदे और मुर्दे हैं और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़ाहिर या छुपा हुआ है उन सबकी संख्या के बराबर तू मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद, रहमत, सलामती और बरकत नाज़िल फ़रमा। और हमारी तरफ़ से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इतना सलाम पहुंचा जो आसमान को किनारों तक भर दे। भाग्यशाली है वह क़ौम जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी का बोझ अपनी गर्दनों पर उठा ले और भाग्यशाली है वह दिल जो आप तक पहुंचा, आप से मिला और आप की मुहब्बत में फ़ना हो गया। हे उस देश के निवासियो ! जिस पर मुहम्मद मुस्तफ़ा के पवित्र क़दम पड़े हैं, अल्लाह तआला तुम पर रहम करे और तुमसे राज़ी हो और तुम्हें ख़ुश रखे। हे अल्लाह के बंदो! मैं तुम्हारे बारे में बहुत हुस्न-ए-ज़न (सुधारणा) रखता हूँ और मेरी रूह तुम से मिलने के लिए प्यासी है। मैं तुम्हारे देशों तथा बस्तियों का इसलिए बहुत इच्छुक हूँ ताकि मैं उन स्थानों को देख सकूँ जहां सर्वश्रेष्ठ हस्ती के कदम पड़े और उस मिट्टी को अपनी आँखों का सुरमा बनाऊँ। और उस की भलाई और भले लोगों से मिलूँ और उस के विशेष आसार और विद्वानों से (मिलूँ) और मेरी आँखें उस देश के औलिया तथा बड़े बड़े पवित्र स्थलों को देखकर ठंडी हों। मैं अल्लाह से दुआ करता हूं कि वह मुझे तुम्हारा देश देखना नसीब करे और अपनी असीम कृपा से मुझे तुम्हें देखने की खुशी नसीब करे।

हे मेरे भाइयो! मैं तुमसे प्यार करता हूँ, तुम्हारी मातृभूमि से प्यार करता हूँ, मुझे तुम्हारी सड़कों की मिट्टी और तुम्हारी गलियों के पत्थरों से प्यार है, और मैं तुम्हें दुनिया की हर चीज़ पर प्राथमिकता देता हूँ। हे अरब के जिगर के टुकड़ो ! अल्लाह तआला ने तुमको विशेष बरकतों और असंख्य गुणों और बड़ी

बड़ी रहमतों का आशीर्वाद दिया है। तुम्हारे बीच अल्लाह का वह घर है, जिसके कारण बस्तियों की माँ (मक्का) को बरकत दी गई, और तुम्हारे बीच उस पवित्र पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मज़ार है, जिसने पूरी दुनिया में एकेश्वरवाद को फैलाया और अल्लाह का तेज प्रकट किया और उसकी महिमा दिखाई। और तुम में से ऐसे लोग थे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की पूरे दिल से, पूरी आत्मा से और अपने पूरे दिमाग से मदद की, और अपना माल और अपनी जानें अल्लाह के धर्म तथा उसकी पवित्र पुस्तक के प्रचार-प्रसार के लिए न्योछावर कर दीं। अत: तुम इन विशेषताओं से विशिष्ट हो और जिसने तुम्हारा सम्मान नहीं किया, उसने अन्याय किया और उल्लंघन किया। हे मेरे भाइयो, मैं अपना यह पत्र टूटे हुए दिल और बहते आँसुओं के साथ तुम्हें लिख रहा हूँ इसलिए तुम मेरी बात सुनो। अल्लाह तआला तुम्हें उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

मैं वह व्यक्ति हूं कि अल्लाह तआला ने अपनी विशेष कृपा से मेरा पोषण किया है और मुझ पर पूर्ण उपकार किया और उसने मुझसे किसी चीज़ की कमी नहीं की और मुझे उन लोगों में से बनाया जिनसे वह वार्तालाप करता और जिनको इलहाम करता है और उसने मुझे अपनी ओर से ज्ञान प्रदान किया है और अपने पसंदीदा मार्गों तथा संयम की गलियों की ओर मेरा मार्गदर्शन किया और मुझ पर उसने अपने बड़े बड़े भेद खोले। अत: कभी तो उसने ऐसे वार्तालाप से मेरी सहायता की जो बहुत स्पष्ट थे और उनमें न ही कोई संदेह था और न कोई शक। और कभी उसने मुझे ऐसे कश्फ़ के प्रकाश से प्रकाशमान किया जो चमकदार दिन के समान स्पष्ट थे। और उसके महान उपकारों में से यह भी है कि उसने मुझे इस दौर और इस ज़माने के लिए इमाम और ख़लीफ़ा बनाया है और मुझे मुजद्दिद के तौर पर इस सदी के आरंभ में अवतरित किया है ताकि मैं लोगों को अंधेरों से प्रकाश की ओर निकालूं और उन्हें गुमराही तथा उपद्रव के मार्गों से निकालकर संयम की चौड़ी सड़क की ओर ले जाऊं। और उसने मुझे वह चीज़ दी जो दिलों को स्वस्थ करती है और महसूस होने वाले संदेह दूर करती है और सृष्टि से अंधेरों को दूर करती है। निस्संदेह उसने इस ज़माने को मुश्किलों में कैद और जटिल समस्याओं में फंसा हुआ पाया और बिदअतों, बुराइयों तथा अंधकारों के नीचे नष्ट होने वाला पाया। तो उसने इरादा किया कि वह इस ज़माने के लोगों को उन आफतों तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की विपत्तियों से मुक्ति दे। उसने पादरी तथा ईसाई दार्शनिकों के उपद्रव को देखा कि वे लोगों के बीच से निकलकर जंगलों तक फैल गया है और इरादों से शुरु होकर बुरे कर्मों को व्यावहारिक रूप से करने तक और पृथ्वी की सतह से उठकर पहाड़ों तक पहुंच गया है। और उसने देखा जो उन्होंने बहुत बड़ी उद्दंडता की है और उन्होंने अपने मामले को अतिशयोक्ति में चरम तक पहुंचा दिया है और प्रतिष्ठावान रब ने देखा कि उनके उपद्रव की बारीकियों तथा उनकी बुद्धि की सूक्ष्मता से और उनकी चालाकियों की विचित्र बातों से और उनके ज्ञान के जादू तथा उनकी कलाओं के इंद्रजाल से और उनके बहुत बड़े धोखे की वजह से बहुत से लोग परीक्षा में डाले गए हैं। और उसने देखा कि वे लोगों के धर्म और उनके ईमान को लूट रहे हैं और वह लोगों के दिलों तथा उनकी आंखों और उनके कानों को मंत्रमुग्ध कर रहे हैं और लोगों को गुमराह करने

के लिए ज्ञात तथा अज्ञात हर प्रकार के रास्तों पर दूर तक चले जाते हैं और अपने छल-कपट से अंधकार को प्रकाश के समान दिखा रहे हैं और उनकी तहरीकों से ही हिंदुओं में से एक क़ौम जो अपना नाम आर्य रखती है, निकली है।.....

और एक महान मुबारक निशान यह है कि जब उसने ईसाइयों के उपद्रव को देखा और पाया कि वे (इस्लाम) धर्म से बहुत रोकते हैं। और उसने देखा कि वे अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पीड़ा पहुँचाते हैं और उनका अपमान कर रहे हैं और इब्न मरियम की बहुत बढ़ा-चढ़ा कर प्रशंसा करते हैं, तो स्वाभिमान के कारण उसका क्रोध भड़क उठा। और उसने मुझे पुकारा और कहा, "मैं तुम्हें मरियम का पुत्र ईसा बनाता हूं, और अल्लाह सब कुछ करने में सक्षम है।" और अल्लाह हर बात पर समर्थ है। तो, मैं अल्लाह का वह स्वाभिमान हूं, जो कि सही समय पर जोश में आया ताकि जो लोग ईसा के बारे में अतिशयोक्ति करते हैं, उन्हें पता चले कि यीशु अल्लाह के एक होने की तरह अकेला नहीं है, और यह कि अल्लाह तआला सक्षम है कि वह अपने नबी सअव की उम्मत में से एक को ईसा बना दे और यह वादा पूरा होने वाला था। हे भाइयो! ये वह बात है जिसे अल्लाह ने पिछली सदियों की नज़रों से छुपा कर रखा था इसका विवरण हमारे समय में प्रकट किया। वह जो चाहता है छुपाता है और जो चाहता है उसे प्रकट कर देता है। और इसके उदाहरण अतीत में बीत चुके हैं। और इस गुप्त विधि को अपनाने में दो प्रमुख युक्तियाँ हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने बंदों के लिए बेहतर और अधिक उपयुक्त समझा है।

पहली तो यह है कि यह ख़बर ग़ैब (परोक्ष) की ख़बरों में से एक थी और इसके प्रकटन का समय बहुत दूर था। और अल्लाह तआला जानता था कि वह इसे लंबे समय और लंबी अवधि के बाद और कई क़ौमों के इस दुनिया से चले जाने के बाद ही प्रकट करेगा। और वह यह भी जानता था कि पहली क़ौमों को इस संक्षिप्त (अस्पष्ट) की व्याख्या तथा उसके महान विवरण से कोई लाभ नहीं होगा। और वह जानता था कि इस समाचार के प्रकट होने से पहले वे सभी मर जाएंगे और इसका विवरण उनके लिए किसी काम का नहीं होगा। इसलिए उसने चाहा कि जो उन्हें नहीं मिल सका उसके बदले में वह उन्हें ईमान लाने का पुण्य दे और उनके (उस पर) विश्वास करने के बाद उत्तम प्रतिफल प्रदान करे। इसलिए उसने अपनी वाह्यी में इस ख़बर के विवरण को छोड़ दिया, और एक रहस्य की तरह एक सूक्ष्म अस्पष्टता को एक सारांश के रूप में अपनाया, और इस सारांश को रूपकों के साथ अलंकृत किया और इसे लाक्षणिक्ताओं तथा गुप्त संकेतों के साथ रंग दिया। और उसने इस इजमाल को अक़ल, समझ और अटकलों से दूर रखा, ताकि वह उनकी परीक्षा ले सके कि उनमें से कौन इस मामले का अनुसरण करता है। अत: वे ईमान ले आए और अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया। और उन्हें सबसे अच्छा इनाम दिया। क्योंकि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के बारे में सुधारणा से काम लिया और उस बात पर ईमान ले आए जिसके बारे में वे सच्चाई नहीं जानते थे और न ही उसके स्वरूप की कोई समझ रखते थे। (अत्तब्लीग़, आईना कमालात-ए-इस्लाम)

★ ★ ★

पंजाब और हिन्दुस्तान के समस्त पादरी सज्जनों के लिए फैसले का एक उत्तम तरीक़ा

अनुवादक: फरहत अहमद आचार्य

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक लिखते हैं :

"ईसाई लोगों का यह विश्वास है कि जो लोग तस्लीस की आस्था और यसू का कफ़्फ़ारा नहीं मानते, वे शाश्वत नर्क में डाले जाएंगे और वह विश्वास जो ख़ुदा तआला ने अपने पवित्र कलाम (वाणी) पवित्र क़ुर्आन के द्वारा मुसलमानों को सिखाया है वह यह है कि एकेश्वरवाद के बिना मुक्ति नहीं। यही एकेश्वरवाद (तौहीद) है जिसके अनुसार समस्त संसार की पकड़ होगी चाहे क़ुर्आन उन तक न पहुंचा हो। क्योंकि यह इन्सान के दिल में स्वभाविक तौर पर अंकित है कि उसका सृष्टा और मालिक अकेला ख़ुदा है जिसके साथ कोई भागीदार नहीं। इस एकेश्वरवाद में कोई भी ऐसी बात नहीं जो ज़बरदस्ती मनवानी पड़े क्योंकि इन्सानी दिल की बनावट के साथ ही इसके नक़्श मनुष्य के दिल में अंकित किये जाते हैं।

परन्तु जैसी कि ईसाइयों की आस्था है असीमित ख़ुदा को तीन उक़्नूम में या चार उक़्नूम में सीमित करना और फिर प्रत्येक उक़्नूम को पूर्ण भी समझना और तरकीब का मुहताज भी और फिर ख़ुदा के बारे में यह वैध रखना कि वह प्रारंभ में कलिमा था फिर वही कलिमा जो ख़ुदा था मरयम के पेट में पड़ा और उसके ख़ून से साक्षात् हुआ और स्वाभाविक मार्ग से पैदा हुआ और समस्त दुःख, ख़सरा, चेचक, दांतों का कष्ट जो मनुष्य को होते हैं, वे सब उठाए। अन्त में जवान होकर पकड़ा गया और सलीब पर चढ़ाया गया। यह अत्यन्त गन्दा शिर्क है जिसमें मनुष्य को ख़ुदा ठहराया गया है। ख़ुदा इस से पवित्र है कि वह किसी के पेट में पड़े और शरीर ग्रहण करे और शत्रुओं के हाथों गिरफ़्तार हो। मानवीय प्रकृति इस को स्वीकार नहीं कर सकती कि ख़ुदा पर ऐसे दुःख की मार और ये संकट पड़ें और वह जो समस्त श्रेष्ठताओं का मालिक और समस्त सम्मानों का उद्गम है अपने लिए ये समस्त अपमान रखे। ईसाई इस बात को मानते हैं कि ख़ुदा की बदनामी का यह पहला ही अवसर है और इस से पूर्व ख़ुदा ने इस प्रकार के अपमान कभी नहीं उठाए। कभी यह बात घटित नहीं हुई कि ख़ुदा भी मनुष्य की तरह किसी स्त्री के गर्भाशय में वीर्य में मिश्रित होकर ठहर गया हो, जब से कि लोगों ने ख़ुदा का नाम सुना कभी ऐसा नहीं हुआ कि वह भी मनुष्य की भांति किसी स्त्री के पेट से पैदा हुआ हो। ये समस्त वे बातें हैं जिन का ईसाइयों को स्वयं इक़रार है, और इस बात का भी इक़रार है कि यद्यपि पहले ये तीन उक़्नूम तीन शरीर पृथक-पृथक नहीं रखते थे, परन्तु इस विशेष युग से जिसको अब 1896 वर्ष हो रहे हैं तीनों उक़्नूम के लिए तीन पृथक-पृथक शरीर निर्धारित हो गए। बाप का वह रूप है जो आदम का है क्योंकि उसने आदम को अपने रूप पर बनाया। देखो तौरात पैदायश अध्याय-1 आयत-27 और बेटा यसू के रूप पर साक्षात् हुआ। देखो यूहन्ना, अध्याय-1, आयत-1 और रूहुल क़ुदूस कबूतर के रूप में साक्षात् हुआ। देखो मती अध्याय-3, आयत-16 अब जिस ने ईसाइयों के इन

तीन साक्षात् ख़ुदाओं का दर्शन करना हो और उनकी शारीरिक तस्लीस का नक़्शा देखना चाहता हो तो कुछ ज़रूरी नहीं कि उनकी ओर याचना ले जाए अपितु जैसा कि हम ने पुस्तक 'सतबचन' में सिक्ख सज्जनों के गुप्त चोले की गुरु के समस्त चेलों को दर्शन करा दिया है इसी प्रकार हम यसू के शागिर्दों को भी उन के तीन साक्षात् ख़ुदाओं के दर्शन करा देते हैं और उनके त्रिकोणीय तस्लीसी ख़ुदा को दिखा देते हैं। चाहिए कि उसके आगे झुकें और नतमस्तक हों और वह यह है जिसको हम ने ईसाइयों की प्रकाशित तस्वीरों से लिया है। ...

ये तीनों साक्षात् ख़ुदा ईसाइयों के विचार में हमेशा के लिए साक्षात् और हमेशा के लिए पृथक-पृथक अस्तित्व रखते हैं और फिर भी तीनों मिलकर एक ख़ुदा है। परन्तु यदि कोई बता सकता है तो हमें बता दे कि बावजूद इस शाश्वत मजस्सिम और परिवर्तन के ये तीनों एक क्योंकर हैं। भला हमें कोई डॉक्टर मार्टिन क्लार्क और पादरी इमादुद्दीन और पादरी ठाकुरदास को उनके पृथक-पृथक शरीर के बावजूद एक करके तो दिखा दे। हम दावे से कहते हैं कि यदि तीनों को कूट कर भी कुछ का मांस कुछ के साथ मिला दिया जाए तो फिर भी जिन को ख़ुदा ने तीन बनाया था कदापि एक नहीं हो सकेंगे। फिर जबकि इस फ़ानी (नश्वर) शरीर के प्राणी बावजूद पृथक-पृथक तथा परिवर्तनशील शरीर होने की संभावना के बावजूद एक नहीं हो सकते, फिर ऐसे तीन मुजस्सम जिनमें ईसाइयों की आस्था के अनुसार अवयवों का पृथक-पृथक होना वैध नहीं एक क्योंकर हो सकते हैं।

यह कहना अनुचित नहीं होगा कि ईसाइयों के ये तीन ख़ुदा कमेटी के तीन सदस्यों के तौर पर हैं और उनके विचार में तीनों की राय की सहमति से प्रत्येक आदेश लागू होता है या राय के बहुमत से फैसला होता है मानो ख़ुदा का कारख़ाना भी प्रजा तांत्रिक शासन है और मानो उनके गाड साहिब को भी **व्यक्तिगत शासन की योग्यता नहीं।** समस्त आधार कोंसिल पर है।

अत: ईसाइयों का यह मिश्रित ख़ुदा है जिसने देखना हो देख ले। पादरी सज्जन ऐसे ख़ुदा वाले धर्म पर तो गर्व करते हैं परन्तु इस्लाम जैसे धर्म का जो ऐसी बुद्धि के विपरीत बातों से पवित्र है अपमान और तिरस्कार कर रहे हैं और दिन-रात यही कार्य है कि अपने दज्जाली धोखों से ख़ुदा के पवित्र और सच्चे नबी को झूठा ठहराएं और बुरी-बुरी तस्वीरों में उस नूरानी रूप को दिखाएं। कुछ अपवित्र प्रकृति के पादरियों ने अपनी पुस्तकों में हमारे सय्यिद-व-मौला ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तस्वीर इस प्रकार खींच कर दिखाई है कि मानो वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसका ख़ूनी रूप है और क्रोध से भरा हुआ खड़ा है तथा एक तलवार हाथ में है और कुछ ग़रीब ईसाइयों इत्यादि को टुकड़े-टुकड़े करना चाहता है। परन्तु यदि इन लोगों को कुछ इन्साफ़ और ईमान में से हिस्सा मिला होता तो इस तस्वीर से पहले मूसा की तस्वीर खींच कर दिखाते और इस प्रकार खींचते कि जैसा एक अत्यन्त निर्दयी और बेरहम इन्सान हाथ में तलवार लेकर दूध पीते बच्चों को उनकी माताओं के सामने टुकड़े-टुकड़े कर रहा है और ऐसा ही यशू बिन नून की तस्वीर प्रस्तुत करते और उस तस्वीर में यह दिखाते कि मानो उसने लाखों निर्दोष बच्चों को उनकी माताओं सहित टुकड़े-टुकड़े करके मैदान में फेंक दिया है। और चूंकि इनकी आस्थानुसार यशू

ख़ुदा है और ये समस्त निर्दयता की कार्यवाहियां उस के आदेश से हुई हैं और वह साकार ख़ुदा है जैसा कि वर्णन हो चुका। तो इस स्थिति में अत्यावश्यक था कि सर्वप्रथम उसकी तस्वीर खींचकर उसके हाथ में कम से कम तीन तलवारें दीं जातीं। पहली वह तलवार जो उसने मूसा को दी और निर्दोष दूध पीते बच्चों को क़त्ल करवाया। दूसरी वह तलवार जो यशू बिन नून को दी। तीसरी वह तलवार जो दाऊद को दी। अफ़सोस कि इस सच को छुपाने वाली क़ौम ने बड़े-बड़े अत्याचारों पर कमर बांध रखी है।

यदि तलवार द्वारा ख़ुदा का अज़ाब उतरना ख़ुदा की विशेषताओं के विरुद्ध है तो क्यों न यह आरोप सर्वप्रथम मूसा से ही आरंभ किया जाए जिसने क़ौमों को क़त्ल करके ख़ून की नहरें बहा दीं और किसी की तौब: को भी स्वीकार न किया। क़ुर्आनी युद्धों ने तो तौब: का दरवाज़ा खुला रखा जो बिल्कुल प्रकृति के नियम और ख़ुदा की दया के अनुकूल है। क्योंकि अब भी जब ख़ुदा तआला ताऊन और हैज़ा इत्यादि से दुनिया पर अपना अज़ाब उतारता है तो साथ ही तबीबों (वैद्यों) को ऐसी-ऐसी बूटियों और उपायों का भी ज्ञान दे देता है जिस से उस संक्रामक रोग की अग्नि का निवारण हो सके। अत: यह मूसा के युद्ध की पद्धति पर आरोप है कि उसमें प्रकृति के नियम के अनुसार बचाव का कोई तरीक़ा स्थापित नहीं किया गया। हाँ कुछ-कुछ स्थानों पर स्थापित भी किया गया है परन्तु पूर्ण रूप से नहीं। अतएव जब कि यह सुन्नतुल्लाह अर्थात् तलवार से अत्याचारी विरोधियों को मारना सदैव से चला आता है तो पवित्र क़ुर्आन पर क्यों विशेष तौर पर ऐतराज़ किया जाता है। क्या मूसा के युग में ख़ुदा कोई और था और इस्लाम में कोई और हो गया? या ख़ुदा को उस समय लड़ाइयां प्रिय लगती थीं और अब बुरी दिखाई देती हैं?

यह अन्तर भी स्मरण रहे कि इस्लाम ने केवल उन लोगों के मुक़ाबले पर तलवार उठाने का आदेश दिया है कि पहले स्वयं तलवार उठाएं और उन्हीं के क़त्ल करने का आदेश दिया है जो पहले आप क़त्ल करें। यह आदेश कदापि नहीं दिया कि तुम एक काफ़िर बादशाह के अधीन होकर और उसके न्याय और इन्साफ़ के लाभ उठाकर फिर उसी पर विद्रोह पूर्ण आक्रमण करो। क़ुर्आन की दृष्टि से यह बदमाशों का तरीक़ा है न कि नेक लोगों का। परन्तु तौरात ने यह तरीक़ा कहीं खोलकर वर्णन नहीं किया। इस से स्पष्ट है कि पवित्र क़ुर्आन अपने जलाली (प्रतापी) और जमाली (सौम्य) आदेशों में न्याय और इन्साफ़ तथा दया एवं उपकार के उस बीच के मार्ग पर चलता है जिस का उदाहरण दुनिया में किसी पुस्तक में मौजूद नहीं। परन्तु अंधे दुश्मन फिर भी ऐतराज़ करते हैं। क्योंकि उनकी प्रकृति प्रकाश से बैर और अंधकार से प्रेम रखती है।

अब इस विज्ञापन के लिखने का उद्देश्य यह है कि हमने बड़े लम्बे अनुभव से परख लिया है कि ये लोग बार-बार दोषी और निरुत्तर होकर फिर भी डंक मारने से नहीं रुकते और उस व्यक्ति को समस्त दोषों से पवित्र समझते हैं जिसने स्वयं इक़रार किया कि **"मैं नेक नहीं"** और जिसने मदिरापान और जुआ तथा खुले तौर पर दूसरों की स्त्रियों को देखना वैध रख कर अपितु स्वयं एक व्याभिचारिणी वैश्या से अपने सर पर हराम की कमाई का तेल डलवाकर और उसको यह अवसर देकर कि वह उसके शरीर से शरीर लगाए, अपनी समस्त उम्मत को अनुमति दे दी कि इन बातों में कोई बात भी अवैध नहीं। तो ऐसे व्यक्ति को तो उन्होंने ख़ुदा बना लिया परन्तु ख़ुदा के मुक़द्दस नबियों को जिन का जीवन केवल ख़ुदा के लिए

था और जो संयम के बारीक मार्गों को सिखा गए, बुरा कहना और गालियां देना आरंभ कर दिया। अत: अब तक ये लोग रुके नहीं और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निन्दा में अत्यन्त अपवित्र और कष्टदायक थिएटर निकालते हैं और नितान्त बुरी तस्वीरों में उस पवित्र अस्तित्व को दिखाते हैं।

अब ऐसे झूठों से मौखिक मुबाहसों से क्योंकर फैसला हो। हम झूठे को मुंहतोड़ उत्तर से दोषी तो ठहरा सकते हैं परन्तु उस का मुंह क्योंकर बन्द करें। उसकी गन्दी जीभ पर कौन सी थैली चढ़ा दें? उसके गालियां देने वाले मुंह पर कौन सा ताला लगा दें? क्या करें? क्या कोई इस से अनभिज्ञ है कि नालायक इमादुद्दीन ने उस पवित्र अस्तित्व नबी के बारे में क्या-क्या गन्दे शब्द प्रयोग किए, जिस से समस्त मुसलमानों के कलेजे टुकड़े-टुकड़े हो गए। 'नूर अफ़्शां' पर्चा लुधियाना में कैसे-कैसे साप्ताहिक केवल इफ़्तिरा की बुनियाद पर इस्लाम के अपमान के वाक्य लिखे जा रहे हैं। रेवाड़ी वाले पादरी ने मुसलमानों का कितना दिल जलाया और हमारे सय्यिद-व-मौला को डाकू तथा बाटमार ठहराया। तो कहां तक लिखें। अत्याचारी पादरियों ने हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लाखों गालियां देकर हमारे दिलों को ज़ख़्मी कर दिया।

परन्तु हम अन्याय करने वाले होंगे यदि साथ ही यह भी गवाही न दें कि इन कार्यवाहियों में सरकार पर कोई आरोप नहीं। नि:सन्देह सरकार प्रत्येक क़ौम को एक ही आंख से देखती है। धार्मिक मुबाहसों की आज़ादी जैसी कि पादरियों को प्राप्त है वैसी ही हमें भी है यदि हम सरकार के न्याय पर विश्वास न रखते तो संभव न था कि इन अपनी शिकायतों को अभिव्यक्त भी कर सकते। परन्तु हम सरकार को यह कष्ट देना ही नहीं चाहते कि वह धार्मिक मुबाहसों की आज़ादी को बिलकुल बन्द कर दें। हाँ हमारा उद्देश्य यह है कि उन शर्तों की पाबन्दी से इस आज़ादी को कुछ सीमित कर दिया जाए जिसके बारे में हम एक पृथक विज्ञापन प्रकाशित कर चुके हैं। परन्तु सरकार अपने राजकीय कार्यों में व्यस्त है। उसको इस फ़ैसले के लिए तो फ़ुर्सत नहीं कि एकेश्वरवाद और तीन साकार ख़ुदाओं की आस्था के बारे में कुछ अपनी राय लिखे और वह कार्यवाही करे। जैसा कि तीसरी सदी के बाद कान्सटनटायन फर्स्ट कुस्तुनतुनिया के बादशाह ने अढ़ाई सौ बिशप को जमा करके अपनी सभा में एकेश्वरवादी ईसाइयों और तीन उक़्नूम के समर्थक ईसाइयों का परस्पर मुबाहसा कराया था और अन्त में एकेश्वरवादी फ़िर्क़े को डिग्री दी थी और स्वयं भी उनका धर्म स्वीकार कर लिया था ऐसी ही यह उच्च सरकार भी करे[1]।★ परन्तु यह सरकार ऐसे

[1]★**हाशिया :-** ईसाइयों में तस्लीस की समस्या तीसरी सदी के बाद अविष्कृत हुई है जैसा कि डिरेपर भी अपनी पुस्तक में बड़े-बड़े उलेमा के हवाले से लिखता है कि इस समस्या का अविष्कारक बिशप अथानासियत एस अलैक्ज़न्ड्रायन था जो तीसरी शताब्दी के बाद हुआ है। जब उसने यह समस्या प्रकाशित करना चाही तो उसी समय बिशप ऐरी एस. उसका इन्कारी खड़ा हो गया और इस मुबाहसे में जन सामान्य और विशेष लोगों का यहां तक जमावड़ा हुआ कि रूम के बादशाह तक ख़बर पहुंच गई। संयोग से उसको मुबाहसों से दिलचस्पी थी। उसने चाहा कि इस मतभेद को अपने सामने ही दोनों पक्षों के उलेमा से दूर कराए अत: उसकी सभा में बड़ी तल्लीनता से ये मुबाहसे हुए और अत्यन्त आनन्द पूर्वक कोन्सिल की कुर्सियां बिछीं और मुनाज़रा करने वाले दो सौ पचास प्रसिद्ध पादरी थे। अन्त में एकेश्वरवादियों का फ़िर्क़ा जो यसू को केवल इन्सान और रसूल जानता था विजयी हुआ। उसी दिन बादशाह ने यूनिटेरियन का

झगड़ों में पड़ना नहीं चाहती। अत: ये प्रतिदिन के बढ़े हुए झगड़े क्योंकर निर्णय पाएं। मुबाहसों के नेक परिणामों से तो निराशा हो चुकी अपितु जैसे-जैसे मुबाहसे बढ़ते जाते हैं वैसे ही वैर भी साथ साथ उन्नति करते जाते हैं। तो इस निराशा के समय में मेरे नज़दीक एक अत्यन्त सरल और आसान फ़ैसले का तरीक़ा है यदि पादरी लोग स्वीकार कर लें और वह यह है कि इस बहस का जो सीमा से अधिक बढ़ गई है ख़ुदा तआला से फ़ैसला कराया जाए।

सर्वप्रथम मुझे यह वर्णन करना आवश्यक है कि ऐसा ख़ुदाई फ़ैसला कराने के लिए सब से अधिक मुझमें जोश है और मेरी हार्दिक मनोकामना है कि इस तरीक़े से यह प्रतिदिन का झगड़ा तय हो जाए। यदि मेरे समर्थन में ख़ुदा का फ़ैसला न हो तो मैं अपनी कुल चल-अचल सम्पत्ति जो दस हज़ार रुपये के मूल्य से कम न होगी, ईसाइयों को दे दूंगा और अग्रिम राशि के तौर पर तीन हज़ार रुपये तक उनके पास जमा भी करा सकता हूँ। इतने माल का मेरे हाथ से निकल जाना मेरे लिए पर्याप्त दण्ड होगा। इसके अतिरिक्त यह भी इक़रार करता हूँ कि मैं अपने हस्ताक्षर द्वारा प्रकाशित करूंगा कि ईसाई विजयी हुए और मैं हार गया इसके अतिरिक्त यह भी इक़रार करता हूँ कि इस विज्ञापन में कोई भी शर्त न होगी न शब्दों की दृष्टि से न अर्थों की दृष्टि से।

और ख़ुदाई फ़ैसले के लिए यह तरीक़ा होगा कि मेरे मुक़ाबले पर एक प्रतिष्ठित पादरी साहिब जो निम्नलिखित पादरियों में से चुने जाएं।[2]★ मुक़ाबले का मैदान के लिए जो दोनों पक्षों की सहमति से निर्धारित किया जाए, तैयार हूँ। तत्पश्चात् हम दोनों अपनी-अपनी जमाअतों के साथ निर्धारित मैदान में उपस्थित हो जाएं। और ख़ुदा तआला से दुआ के साथ यह फ़ैसला चाहें कि हम दोनों में से जो व्यक्ति ख़ुदा की नज़र में वास्तव में झूठा और प्रकोप का पात्र है। ख़ुदा तआला एक वर्ष में उस झूठे पर वह प्रकोप उतारे जो अपने स्वाभिमान की दृष्टि से हमेशा झूठी और झुठलाने वाली क़ौमों पर किया करता है। जैसा कि उसने फ़िरऔन पर किया, नमरूद पर किया और नूह की क़ौम पर किया और यहूदियों पर किया। पादरी साहिबान यह बात स्मरण रखें कि इस परस्पर दुआ में किसी विशेष सदस्य पर लानत है न बद्दुआ है। अपितु उस झूठे को दण्ड दिलाने के उद्देश्य से है जो अपने झूठ को छोड़ना नहीं चाहता। एक संसार के जीवित होने के लिए एक का मरना उत्तम है।" (अंजाम-ए-आथम पृष्ठ 40-48)

★ ★ ★

धर्म ग्रहण कर लिया और उसके बाद छ: बादशाह एकेश्वरवादी रहे। अत: जिस क़ैसर को हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पत्र लिखा था। जिस की चर्चा सही बुख़ारी में प्रथम पृष्ठ में ही मौजूद है। वह भी एकेश्वरवादी ही था। उसने क़ुर्आन के इस विषय पर सूचना पाकर कि मसीह केवल इन्सान है पुष्टि की। जैसी कि नज्जाशी ने भी जो ईसाई बादशाह था क़सम खाकर कहा कि यसू का पद इस से तनिक भी अधिक नहीं जो क़ुर्आन ने उसके बारे में लिखा है। परन्तु नज्जाशी इसके बाद खुला-खुला मुसलमान हो गया। इसी से।

★ **नोट -** इन सज्जनों में से कोई चुना जाना चाहिए-प्रथम-डॉक्टर मार्टिन क्लार्क, द्वतीय-पादरी इमादुद्दीन, फिर पादरी ठाकुर दास, या हुसामुद्दीन बम्बई, या सफ़दर अली भिण्डारा या तामस हावल, या फ़तह मसीह दूसरों की अनुमति की शर्त के साथ।

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
 # 2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kachegud
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

अरबईन नम्बर-2

संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमात, हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी की कलम से

अनुवादक : इब्नुल मेहदी लईक एम ए

ख़ुदा तआला की किताब क़ुर्आन करीम से यह बिल्कुल निर्णय हो चुका है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुके हैं। आश्चर्य कि ख़ुदा तआला तो क़ुर्आन करीम के अनेक स्थानों में हज़रत ईसा की मृत्यु प्रकट करता है और लोग उसे आकाश से उतार रहे हैं। क्या अब क़ुर्आन करीम के क़िस्से भी निरस्त हो गए? यह वही क़ुर्आन है जिसकी एक आयत सुनकर एक लाख सहाबा ने सर झुका दिया था और अविलम्ब स्वीकार कर लिया था कि आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वल्लम) से पूर्व समस्त नबी ईसा इत्यादि मृत्यु पा चुके हैं और वही क़ुर्आन है जो बार-बार आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है और आप लोगों को उसकी कुछ भी परवाह नहीं। आप लोग मेरी बड़ी-बड़ी पुस्तकों को तो नहीं देखते तथा फ़ुर्सत ही कहां है परन्तु यदि मेरी पुस्तक 'तुहफ़ा गोलड़विया' और 'तुहफ़ा गज़नविया' को ही देखो जो पीर मेहर अली शाह, और गज़नवी जमाअत के मौलवी अब्दुल जब्बार, अब्दुल वाहिद तथा अब्दुल हक़ इत्यादि के मार्ग-दर्शन हेतु लिखी गई हैं जिन्हें आप लोग केवल दो घंटे के अन्दर बड़े चिन्तन मनन के साथ पढ़ सकते हैं तो आप को ज्ञात हो जाएगा कि मसीह के बारे में क़ुर्आन करीम क्या कहता है। आप स्मरण रखें कि आप जो मसीह के जीवित रहने पर इतना बल देते हैं यह ख़ुदा के कलाम के आशय के विपरीत है। हे प्रिय लोगो ! स्मरण रखो कि जिस व्यक्ति ने आना था आ चुका और शताब्दी जिसके आरंभ में मसीह मौऊद को आना चाहिए था उसमें से भी सत्रह वर्ष बीत गए और इस शताब्दी हिज्री में जिस पर उम्मत के वलियों की दृष्टि लगी हुई थी उसमें तुम्हारे कथनानुसार एक छोटा सा मुजद्दिद भी पैदा न हुआ और मात्र एक दज्जाल पैदा हुआ। क्या इन धृष्टताओं का ख़ुदा के दरबार में उत्तर नहीं देना पड़ेगा? यद्यपि हृदय कैसे ही कठोर हो गए हैं परन्तु इतना तो भय करना चाहिए था कि जो व्यक्ति शाताब्दी के आरम्भ में पैदा हुआ तथा रमज़ान के चन्द्र और सूर्य ग्रहण ने उसकी साक्ष्य दी तथा इस्लाम की वर्तमान कमज़ोरी और शत्रुओं के निरन्तर प्रहारों ने उसकी आवश्यकता सिद्ध की तथा पूर्व वलियों के कश्फ़ों ने इस बात पर निश्चित रूप से मुहर लगा दी कि वह चौदहवी शताब्दी हिज्री के सर पर पैदा होगा और यह कि पंजाब में पैदा होगा। ऐसे व्यक्ति को झुठलाने में शीघ्रता न करते। अन्ततः एक दिन मरना है तथा सब कुछ यहीं छोड़ जाना है देखो यदि मैं ख़ुदा की ओर से हुआ और तुम ने मुझे झूठा कहा और मुझे काफ़िर ठहराया और दज्जाल नाम दिया तो ख़ुदा को क्या उत्तर दोगे? क्या उन्हीं के समान उत्तर है जो यहुदियों और ईसाइयों ने आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से इन्कार करने के समय अपनी किताबों में लिखे हैं कि तौरात के समस्त निर्धारित निशान पूरे नहीं हुए तथा कुछ रह गए हैं। अतः बहुत समय हुआ कि ख़ुदा उन्हें उत्तर दे चुका कि जो कुछ तुम्हारे हाथ में है वह सब कुछ ठीक नहीं है और न वे समस्त अर्थ सही हैं जो तुम कर रहे हो। जो व्यक्ति हकम (मध्यस्थ) बना कर भेजा गया है उसकी बात सुनो। अतः यही उत्तर अब ख़ुदा तआला की ओर से है। चाहो तो स्वीकार करो। खेद है! आप लोगों को चाहिए था कि यहूदियों और ईसाइयों के क़िस्से

से शिक्षा लेते। उन लोगों का हज़रत मसीह और हज़रत ख़ातमुन्नबिय्यीन के बारे में यही विवाद था कि हम नहीं मानेंगे जब तक समस्त लक्षण पूरे न हो जाएं और दीर्घ समय गुज़रने एवं अनेकों परिवर्तनों के कारण यह सम्भव था। इसलिए वे कुफ़्र पर मरे। अत: तुम इसी प्रकार ठोकर मत खाओ जो यहूदी और ईसाई खा चुके हैं। यदि तुम्हारा समस्त भण्डार उचित होता तो फिर हकम के आने की क्या आवश्यकता थी। प्रत्येक सम्प्रदाय का यही विचार है कि जो कुछ मेरे पास है यही सही है। अब ये समस्त सम्प्रदाय तो सत्य पर नहीं। इसलिए सत्य वही है जो 'हकम' के मुख से निकले। यदि ईमान हो तो ख़ुदा के नियुक्त किए हुए हकम के आदेश से कुछ हदीसों का छोड़ना या उनकी सही व्याख्या करना कोई कठिन कार्य नहीं है। यह तुम्हारे बुज़ुर्गों के अपने मुख के प्रस्ताव हैं कि अमुक हदीस सही है और अमुक 'हसन' और अमुक 'मशहूर' और अमुक मौज़ूअ है, ख़ुदा का आदेश नहीं तथा किसी वह्यी के द्वारा यह विभाजन नहीं हुआ। फिर ऐसी हदीस जो क़ुर्आन के विपरीत हो तथा कुछ अन्य हदीसों के भी विपरीत और ख़ुदा के आदेशों से भी विपरीत हो तो क्या कारण कि उसको रद्द न किया जाए। क्या यह आवश्यक है कि जब कोई ख़ुदा की ओर से आए तो उस पर अनिवार्य है कि वर्तमान उम्मत की प्रत्येक अच्छी-बुरी बात को मान ले। यदि यह मापदण्ड है तो न हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की नुबुव्वत सिद्ध हो सकती है और न हज़रत ख़ातमुन्नबिय्यीन की। उदाहरणतया मसीह के लिए यहूदियों के हाथ में मलाकी नबी की किताब के संदर्भ से यह निशान था कि जब तक एलिया नबी दोबारा संसार में न आए मसीह नहीं आएगा और दूसरा यह निशान कि वह एक बादशाह के रूप में प्रकट होगा तथा अन्य शक्तियों के शासन से यहूदियों को मुक्ति दिलाएगा परन्तु क्या हज़रत मसीह बादशाह होकर आए अथवा उनके आने से पूर्व एलिया नबी आकाश से उतरा? अपितु दोनों भविष्यवाणियां ग़लत निकलीं और कोई निशान हज़रत मसीह पर चरितार्थ न हुआ। अन्तत: हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने व्याख्याओं से काम लिया जिनको यहूदी आज तक स्वीकार नहीं करते और उन पर उपहास करते हैं और 'ख़ुदा की शरण' उनको झूठा बनाने वाला मानते हैं और कहते हैं कि मलाकी नबी की किताब में तो स्पष्ट और साफ़ शब्दों में कहा गया था कि स्वयं एलिया नबी ही दोबारा आ जाएगा यह तो नहीं कहा था कि उनका कोई समरूप आएगा और प्रत्यक्ष इबारत पर दृष्टि डालकर देखें तो यहूदी सच्चे मालूम होते हैं। इसी प्रकार आने वाला मसीह उनकी किताबों में बादशाह के तौर पर प्रकट किया गया था इन अर्थों के अनुसार भी देखें तो यहूदी सच्चे मालूम होते हैं। इसके बावजूद इस बात में क्या संदेह है कि हज़रत मसीह सच्चे नबी हैं क्योंकि वास्तविकता यह है कि भविष्यवाणियों में वास्तविक शब्दों से हट कर भी व्याख्याएं की जाती हैं और रूपक भी होते हैं, परिवर्तन और अक्षरांतरण की भी संभावना है। अत: प्रत्येक नबी या मुहद्दिस जो हकम होकर आता है वह उस जाति द्वारा प्रस्तुत बातों में से कुछ को स्वीकार करता है और कुछ रद्द कर देता है और उसके बारे में उन लोगों ने जो-जो लक्षण निर्धारित किए हुए होते हैं कुछ तो उस पर चरितार्थ हो जाते हैं और कुछ चरितार्थ नहीं होते क्योंकि उनमें कुछ मिलावट हो जाती है या विपरीत अर्थ किए जाते हैं। अत: जो व्यक्ति मेरे बारे में यह हठ करता है कि जब तक वे समस्त लक्षण जो सुन्नियों और शियों ने मसीह और महदी के बारे में बना रखे हैं पूर्ण न हो जाएं तब तक हम नहीं मानेंगे तो वह बहुत अन्याय करता है। ऐसा व्यक्ति यदि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का युग पाता

तो आप[स.] को कभी न मानता और यदि हज़रत ईसा के युग में होता तो उनको भी स्वीकार न करता। अत: सत्याभिलाषी के लिए यही मार्ग साफ़ और भयरहित है कि जिस व्यक्ति की पुष्टि के लिए आकाशीय निशान प्रकट हो चुके हों उस को झूठा कहने से डरें क्योंकि हदीसों के लेख जिनमें से प्रत्येक सम्प्रदाय अपनी-अपनी विचारधारा के समर्थन में अपने पास हदीसों का एक भण्डार रखता है वास्तव में ये हदीसें कल्पना से कुछ अधिक स्तर नहीं रखतीं और कल्पना विश्वास को समाप्त नहीं कर सकती। उदाहरणतया ये समस्त काल्पनिक बातें हैं कि मसीह मौऊद आसमान से उतरेगा वरन् काल्पनिक भ्रमपूर्ण और निराधार बातें हैं। क्योंकि क़ुर्आन के विपरीत हैं और मे'राज की हदीस भी इसे झुठलाती है क्योंकि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) भी तो आकाश पर गए थे, परन्तु किस ने चढ़ते और उतरते देखा है?

अत: हे क़ौम के बुज़ुर्गों ! आप लोग जो मुझे दज्जाल और काफ़िर कहते हो तथा झूठ बनाने वाला समझते हैं। आप लोग विचार करके देख लें कि इतनी धृष्टता और दिलेरी के लिए आप के हाथ में क्या है? क्या सत्य नहीं कि क़ुर्आन करीम जो ख़ुदा की वाणी (कलाम) है उसके स्पष्ट आदेशों से तो हज़रत मसीह की मृत्यु ही सिद्ध होती है, क्योंकि ख़ुदा ने स्पष्ट शब्दों में फ़रमा दिया कि वह मृत्यु पा चुका, जैसा कि आयत फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी इस पर साक्षी है। आप लोग भली-भांति जानते हैं कि तवफ़्फ़ा के अर्थ रूह को निकालने के अतिरिक्त और कुछ नहीं★ फिर यह दूसरी आयत कि 'वमा मुहम्मदुन इल्ला रसूल क़द ख़लत मिन क़ब्लिहिर्रुसुल' وما محمد الّا رسول قد خلت من قبله الرُّسُل

यह वह आयत है जो आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के समय में हज़रत अबू बक़र[रज़ि.] ने यह रद्द करने के लिए पढ़ी थी कि पहले समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं और इस पर समस्त सहाबा की सर्वसम्मति हो गई थी। इसी प्रकार आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने मे'राज की रात में हज़रत मसीह को मृत्यु प्राप्त नबियों की जमाअत में देखा तथा आप ने यह भी फ़रमाया कि मसीह ने एक सौ बीस वर्ष की आयु पाई और आपने यह भी फ़रमाया कि यदि मूसा और ईसा जीवित होते तो मेरा अनुसरण करते और क़ुर्आन में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को ख़ातमुन्नबिय्यीन ठहराया गया। अत: अब बताओ इन समस्त स्पष्ट आदेशों के पश्चात् हज़रत ईसा की मृत्यु में कौन सा संदेह रह गया। रहा मेरा दावा तो वह भी प्रमाण रहित नहीं। बुख़ारी और मुस्लिम में स्पष्ट लिखा है कि मसीह मौऊद इसी उम्मत में से होगा और ख़ुदा ने मेरे लिए आकाश पर रमज़ान में सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण किया तथा इसी प्रकार पृथ्वी पर बहुत से निशान प्रकट हुए तथा अल्लाह तआला के नियमानुसार प्रमाण पूरा हो गया। मुझे क़सम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं कि यदि आप लोग अपने हृदयों को साफ़ करके ख़ुदा का कोई अन्य निशान देखना चाहें तो वह सामर्थ्यवान ख़ुदा इसके बिना कि आप लोगों की बनाई किसी नवीन बात के अधीन

★ जैसा कि शब्दकोष में तवफ़्फ़ा के अर्थ जहां ख़ुदा कर्ता और मनुष्य कर्म हो मारने के अतिरिक्ति और कुछ नहीं। इसी प्रकार क़ुर्आन करीम में प्रारम्भ से अन्त तक तवफ़्फ़ा का शब्द केवल मारने और रूह निकालने के लिए प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण क़ुर्आन में अन्य कोई अर्थ नहीं। इसी से।

हो अपनी इच्छा और अधिकार से निशान दिखाने पर समर्थ है[2]★ और मैं विश्वास रखता हूँ कि यदि आप लोग सच्चे हृदय से तौबा की नीयत करके मुझ से मांग करें और ख़ुदा के सामने यह प्रण कर लें कि यदि कोई अद्भुत चमत्कार जो मानव-शक्तियों से श्रेष्ठतर हो प्रकट हो जाए तो हम यह समस्त द्वेष और शत्रुता त्याग कर मात्र ख़ुदा को प्रसन्न करने के लिए बैअत के सिलसिले में सम्मिलित हो जाएंगे तो ख़ुदा ताआला अवश्य कोई निशान दिखाएगा क्योंकि वह कृपालु और दयालु है परन्तु मेरे अधिकार में नहीं है कि मैं निशान दिखाने के लिए दो तीन दिन निर्धारित कर दूँ या आप लोगों की इच्छानुसार चलूं। यह अल्लाह तआला के अधिकार में है जो तिथि चाहे निर्धारित करे। यदि नीयत में सत्य की अभिलाषा हो तो यह स्थान किसी विवाद का नहीं, क्योंकि जब वर्तमान युग को ख़ुदा तआला कोई नवीन निशान दिखाएगा। अत: यह तो नहीं होगा कि वह कोई पचास-साठ वर्ष निर्धारित कर दे वरन् कोई साधारण अवधि होगी जो अदालत के मुक़द्दमों अथवा व्यापारिक मामलों आदि में भी मतलबी लोग अपने लिए स्वीकार कर लेते हैं।

इस का फ़ैसला इस प्रकार से हो सकता है जब हृदयों से पूर्णतया विकार दूर किए जाएं और वास्तव में आप लोगों की इच्छा हो कि ख़ुदा की साक्ष्य के साथ फ़ैसला कर लें। इस उपाय में यह आवश्यक होगा कि कम से कम चालीस प्रसिद्ध मौलवी जैसे मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी, मौलवी नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी, मौलवी अब्दुल जब्बार साहिब ग़ज़नवी फिर अमृतसरी, मौलवी रशीद अहमद साहिब गंगोही और मौलवी पीर महर अली शाह साहिब गोलड़वी एक लिखित इक़रार नामा पचास सम्मानित मुसलमानों की साक्ष्य अंकित करके अख़बार द्वारा प्रकाशित कर दें कि यदि ऐसा निशान जो वास्तव में सामान्य प्रकृति से हटकर अद्भुत हो, प्रकट हो गया तो हम प्रतापी ख़ुदा से डर कर विरोध त्याग देंगे और बैअत में सम्मिलित हो जाएंगे और यदि यह उपाय आपको स्वीकार न हो और ये विचार बाधक हो जाएं कि बैअत का ऐसा इक़रार प्रकाशित करने में हमारा अपमान है और या इतनी विनम्रता प्रत्येक व्यक्ति से असम्भव है तो एक और आसान उपाय है जिस से अधिक अन्य कोई आसान उपाय नहीं, जिसमें न आपका कोई अपमान है और न किसी मुबाहले से किसी भयानक परिणाम जैसे प्राण, धन-सम्पत्ति अथवा सम्मान के संबंध में कुछ भय है और वह यह कि आप लोग केवल ख़ुदा से डर कर तथा इस मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की उम्मत पर दया करते हुए बटाला, अमृतसर या लाहौर में एक जलसा करें और उस जलसे में जहां तक संभव हो और जितना हो सके आदरणीय उलमा तथा सांसारिक लोग एकत्र हों और मैं अपनी जमाअत के साथ उपस्थित हो जाऊं तब

2★ अभी मक्का और मदीना के लोगों के लिए भारी निशान प्रकट हुआ है। वह यह कि तेरह सौ वर्ष से मक्का से मदीना में जाने के लिए ऊंटों की सवारी चली आ रही थी प्रतिवर्ष कई लाख ऊंट मक्का से मदीना को और मदीना से मक्का को जाते थे तथा उन ऊंटों के बारे में क़ुर्आन और हदीस दोनों में से एक समान यह भविष्यवाणी थी कि एक वह युग आने वाला है कि ऊंट बेकार किए जाएंगे और उन पर कोई सवार नहीं होगा। अत: आयत وَاِذا الْعِشارُ عُطِّلَتْ और हदीस يُترك القلاصُ فَلَا يسعٰى عَليها इस पर साक्षी है। अत: यह कितनी महान भविष्यवाणी है जो मसीह के युग के अतिरिक्त मसीह मौऊद के प्रकट होने के लिए बतौर निशान के थी जो रेल की तैयारी से पूर्ण हो गई। इस पर ख़ुदा की प्रशंसा। इसी से

वे सब यह दुआ करें कि हे ख़ुदा ! यदि तू जानता है कि यह व्यक्ति झूठा है और तेरी ओर से नहीं है और न मसीह मौऊद है और न महदी है तो इस उपद्रवकारी को मुसलमानों में से दूर कर और इसकी शरारतों से इस्लाम और मुसलमानों को बचा ले। जिस प्रकार तूने 'मुसैलिमा कज़्ज़ाब' और 'अस्वद अन्सी' को संसार से उठा कर मुसलमानों को उनकी शरारत से बचा लिया और यदि यह तेरी ओर से है तथा हमारी बुद्धि और समझ का दोष है तो हे शक्तिशाली ख़ुदा ! हमें विवेक प्रदान कर ताकि हम तबाह न हो जाएं तथा इसके समर्थन में कुछ ऐसी बातें और निशान प्रकट कर कि हमारे स्वभाव उन्हें स्वीकार कर लें कि यह तेरी ओर से है और जब यह दुआ हो चुके तो मैं और मेरी जमाअत ऊंचे स्वर में आमीन करे। तत्पश्चात् मैं दुआ करूंगा और उस समय मेरे हाथ में वे समस्त इल्हाम होंगे जो अभी लिखे गए हैं और कुछ नीचे लिखे जाएंगे। अत: यही प्रकाशित पुस्तक जिसमें ये समस्त इल्हाम हैं हाथ में होगा। और दुआ का लेख यह होगा कि हे ख़ुदा ! यदि ये इल्हाम जो इस पुस्तक में लिखित हैं जो इस समय मेरे हाथ में हैं जिनके अनुसार मैं स्वयं को मसीह मौऊद और महदी माहूद समझता हूँ और हज़रत मसीह को मृत्यु प्रप्त समझता हूँ तेरा कलाम नहीं है और मैं तेरे निकट झूठा, झूठ बनाने वाला और दज्जाल हूँ जिसने उम्मत-ए-मुहम्मदिया में उपद्रव डाला है और मुझ पर तेरा प्रकोप है तो मैं तेरे दरबार में विनयपूर्वक दुआ करता हूँ कि आज की तिथि से एक वर्ष के अन्दर जीवितों में से मेरा नाम काट दे और मेरा समस्त कारोबार अस्त-व्यस्त कर दे और संसार से मेरा नाम मिटा दे और यदि मैं तेरी ओर से हूँ ये इल्हाम जो इस समय मेरे हाथ में हैं तेरी ओर से हैं और मैं तेरी कृपा का पात्र हूँ तो शक्तिशाली दयालु ख़ुदा ! इसी अगले वर्ष में मेरी जमाअत को एक अद्‌भुत एवं विलक्षण उन्नित दे, अद्‌भुत बरकतें दे तथा मेरी आय में बरकत प्रदान कर और आकाशीय समर्थन उतार। जब यह दुआ हो चुके तो समस्त विरोधीजन जो उपस्थित हों आमीन कहें। (... शेष)

★ ★ ★

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

अनुवादक: सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

प्रश्न : एक बच्ची ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत-ए-अक़्दस में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर बनने वाली डाक्यूमैंटरी bloodline of christ का वर्णन करके इस में वर्णन कहानी की हक़ीक़त दरयाफ़त की। हुज़ूर अनवर ने अपने पत्र दिनांक 21 नवंबर 2019 ई. में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर दिया :

उत्तर : इस से पहले भी इस विषय पर कई फिल्में बन चुकी हैं और पुस्तकें भी लिखी जा चुकी हैं। इस डाक्यूमैंटरी में वर्णन हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम की हिज्रत करने की बात तो ठीक है लेकिन उनके फ्रांस की तरफ़ हिज्रत करने वाली बात दरुस्त नहीं क्योंकि उस ज़माने में फ्रांस में उनके अनुयाईयों की कोई जमाअत नहीं थी। बल्कि उनके कबीले तो कश्मीर के इलाक़ा में थे। इसलिए उसी तरफ़ उन्होंने हिज्रत की थी। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात को अपनी तसनीफ़ "मसीह हिन्दोस्तान में" में अलग प्रमाणों के साथ साबित फ़रमाया है।

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ हॉलैंड के ख़ुद्दाम की virtual मुलाक़ात दिनांक 30 अगस्त 2020 ई. में एक ख़ादिम (नौजवान) ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि दुनिया के मौजूदा हालात में हमें farming की तरफ़ अत्याधिकत तवज्जा देनी चाहिए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस पर फ़रमाया :

उत्तर : प्रश्न यह है कि पहले जब यूरोपियन यूनीयन इकट्ठी हुई है, उन्होंने हर मुल्क में अपना अपना इलाक़ा बांट लिया हुआ है कि तुम फ़रूट उगाओगे, तुम crops उगाओगे, तुम अमुक चीज़ उगाओगे, तुम अमुक चीज़ उगाओगे। तो जब तक यूरोपियन यूनीयन क़ायम है, उस समय तक तो बड़ी अच्छी बात है ये करते रहें। अब हॉलैंड के ज़िम्मा उन्होंने लगाया हुआ है, उनके हाँ dairy products हैं या fruits हैं। और fruits भी ख़ास किस्म के हैं। pears इत्यादि और something like that यू.के brexit के माध्यम निकल गया है, थोड़ी देर बाद जब ये पूरी तरह निकल जाऐंगे तो उन्हें फल मंगवाने के लिए भी मुश्किल पेश आएगी। और wheat crisis भी आजाएगा। तो उनको मुश्किलात पेश आयेंगी, इसलिए यू.के के लिए तो ज़रूरी है कि agriculture पर focus करें और उसको अत्याधिक develop करने की कोशिश करें और अपने agriculture में self-sufficient बने, grains में भी और vegetables में भी और fruits में भी। जहां तक यूरोप का प्रश्न है तो यूरोप का जो grains है, इस में तक़रीबन वे self-sufficient ही हैं। बल्कि export भी करते हैं। इसी तरह फल इत्यादि हैं। कुछ सबज़ियां हैं जो tropical इलाक़ों से ये लाते हैं। वह यहां हो नहीं सकतीं अतिरिक्त इसके कि greenhouses

बना के वे लगा जाएं। इसलिए बेहतर यही है कि अपने मुल्कों की पैदावार के लिहाज़ से वे करें। यदि यूरोप एक रहेगा तो ठीक है। लेकिन कल को कोई और भी मुल्क यूरोपियन यूनीयन से निकलता है तो फिर उस को मुश्किल पड़ेगी जिस तरह इंग्लिस्तान को मुश्किल पड़ रही है। फिर रशिया जब इकट्ठा था तो उस समय उन्होंने बनाया हुआ था कि अमुक state में गंदुम उगेगी, अमुक में कॉटन उगेगी, अमुक में अमुक crop होगी। और जब वे टूट गए तो फिर उनकी states को भी मसायल पैदा हुए। इसलिए कोशिश ये करनी चाहिए कि इकट्ठे रहें और यदि कहीं chances पैदा होने का इमकान है तो जो हमारे politicians हैं उनको यह सोचने से पहले कि हमने अलग होना है, अपने लोगों की जो staple food है इस को मुहय्या करने के लिए भी पहले सोचना चाहिए कि किस तरह हम यह मुहय्या करेंगे और इस के लिए प्लैनिंग होनी चाहिए। बग़ैर प्लैनिंग के छोड़ दें तो फिर वह हाल होता है जो अब यू.के का होने वाला है। तो सारे यूरोपियन यूनीयन के मुल्कों को देखना चाहिए, बैठना चाहिए, ग़ौर करना चाहिए कि हमारे सारे यूरोप की, जो हमारी यूरोपियन यूनीयन में छब्बीस सत्ताईस मुल्क शामिल हैं उनकी requirement क्या है और इस requirement के हिसाब से हमारी अलग grains की हर साल की produce क्या है और इस produce को हम ने किस तरह मज़ीद बेहतर करना है। तो इस लिहाज़ से ठीक है आप की बात, कोशिश करनी चाहिए। लेकिन यदि उस के बाद फिर crisis आता है और crisis के बाद जंग होती है तो इस में पता नहीं यदि कहीं किसी ने पागलपन में एटम-बम इस्तिमाल कर दिया तो न वहां agriculture रहनी है और न वहां कुछ और चीज़ रहनी है। तो इसलिए अल्लाह तआला ही रहम करे।

प्रश्न : इस मुलाक़ात में एक ख़ादिम ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि छोटे बच्चों की तर्बीयत के लिए किस तरह और क्या तरीक़ इख़्तियार किया जा सकता है? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया

उत्तर : बात यह है कि अल्लाह तआला ने तो कहा है कि जब बच्चा पैदा होता है उसी समय तर्बीयत करो। इसीलिए इस्लाम में यह प्रचलित है यह सुन्नत है, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी यह फ़रमाया करते थे और फिर हम अमल भी इसी बात पर करते हैं कि जब बच्चा पैदा होता है तो उसके दाएं कान में अज़ान देते हैं और बाएं कान में तकबीर पढ़ते हैं। इसलिए कि अल्लाह तआला का नाम उस के कान में पड़े और तौहीद पर वह क़ायम हो। तो तर्बीयत जो है वह तो अल्लाह तआला ने कहा है कि पहले दिन से शुरू कर दो। यह न देखो कि बच्चा छोटा है इस को समझ नहीं आएगी। बच्चा छोटा है इस को बताओ, कोई चीज़ तुम देते हो तो तुम कहो कि यह हमें अल्लाह तआला ने दी है, अल्लाह तआला ने तुम्हारा इंतिज़ाम किया। अल्लाह तआला ने मेरे दिल में डाला, अल्लाह तआला ने मुझे सहूलत मुहय्या की। हमने तौहीद को क़ायम करना है इस लिए पहली बात तो यह है कि अल्लाह तआला पर उनका ईमान पैदा करो कि जो चीज़ वे हासिल करते हैं, वह अल्लाह तआला उन के लिए उनका इंतिज़ाम करता है। इस तरह अल्लाह तआला पर आहिस्ता-आहिस्ता यक़ीन बढ़ना शुरू होगा।

फिर बताओ कि जब अल्लाह तआला हमें चीज़ें देता है तो हम ने अल्लाह तआला का शुक्र भी अदा करना है। फिर कहो कि तुम अभी छोटे हो, तुम्हें पता नहीं, तुम अल्लाह मियां से केवल दुआ किया करो कि अल्लाह तआला हमें इसी तरह इनामात देता रहे, हमारे पर फ़ज़ल करता रहे। और हम बड़े हो गए हैं इसलिए हमें कुछ थोड़ा सा पता लग गया है इसलिए हम अल्लाह तआला के हुज़ूर झुकते हैं, नमाज़ पढ़ते हैं। जब तुम बड़े होगे तो तुम भी नमाज़ पढ़नी शुरू कर दोगे। फिर जब बच्चा सात साल का होता है यही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उस को बताओ कि तुमने नमाज़ पढ़नी है या नमाज़ फ़र्ज़ है। और आहिस्ता-आहिस्ता उसको दो या तीन या चार जितनी नमाज़ें बच्चा पढ़ सकता है पढ़ता रहे और जब दस का हो जाये, उस समय matured दिमाग़ हो जाता है, फिर उस को नमाज़ पढ़ने की आदत डाल दो। तो यह शुरू की जो तर्बीयत है, वही है जो बच्चा को आख़िर तक काम देती है। और फिर क़ुरआन-ए-करीम भी बच्चा पढ़ता है। लेकिन इतना भी stress बच्चे पर न डालो कि तीन साल की उम्र में उसे क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाना शुरू कर दो, चार साल की उम्र में वह थक जाए और जब ग्यारह साल की उम्र का हो तो बाहर के माहौल में जाए और आज़ादी उस को हासिल होना शुरू हो जाए कहने का मतलब एक दरमियाना रवैय्या अपनाओ। बच्चे को समझाओ, अल्लाह तआला की ज़ात पर ईमान दिलवाओ, इस्लाम की सच्चाई का सबूत दो। इस ज़माना में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दीन की सच्चाई क़ायम करने के लिए भेजा है इस की बातें बताओ। छोटी छोटी कहानियां सुना कर, सहाबा के छोटे छोटे वाक़ियात सुना कर, नबियों के वाक़ियात सुना कर, अल्लाह तआला के जो लोगों पर फ़ज़ल हुए हैं उनकी कहानियां सुना के, जो तुम पर फ़ज़ल हुए हैं उनकी कहानी के interest पैदा करो। तो इस तरह एक मुहब्बत पैदा की जाती है। नेक नीयती से, तवज्जा से माँ बाप बच्चों को समझाते रहें, दीन की तरफ़ लाते रहें तो फिर दीन से वह attach हो जाऐंगे तो फिर ख़ुदा तआला की तरफ़ रुजहान भी होगा, फिर नमाज़ों की तरफ़ तवज्जा भी होगी। लेकिन पंजाबियों की तरह यह कह देना कि बच्चे को छोड़ दो, बड़ा होगा तो आप ही ठीक हो जाएगा। यह काम नहीं चलेगा। अल्लाह तआला ने तो हमें सबक़ दिया कि पहले दिन से तर्बीयत करो। इसलिए "बड़ा हो के ठीक हो जाएगा" वाली बात कोई नहीं है। बच्चों की तर्बीयत उसकी उम्र के लिहाज़ से करो और अपने नमूने दिखाओ।

प्रश्न : हॉलैंड के ख़ुद्दाम की 30 अगस्त 2020 ई. की virtual मुलाक़ात में एक और ख़ादिम ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि एक ख़ादिम को कौन से काम कम से कम रोज़ाना करने चाहिएं? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : एक ख़ादिम को कम से कम रोज़ाना पाँच नमाज़ें समय पर पढ़ लेनी चाहिऐं। फ़ज्र की नमाज़ फ़ज्र के समय उठ के पढ़ो और यदि नमाज़ सैंटर या मस्जिद क़रीब है तो वहां जाके बाजमाअत पढ़ो। और काम के बाद मग़रिब और इशा की नमाज़ें भी नमाज़ सैंटर में पढ़ें। और काम पर ज़ुहर अस्र की नमाज़ें भी पढ़ें। अपनी पाँच नमाज़ों की पाबंदी कर लें क्योंकि यह बुनियादी आदेश है। यह तो

रोज़ाना का काम है, यह काम कर लें। टक्करें नहीं मारनी। इसलिए नमाज़ पढ़ेंगे कि अल्लाह तआला का आदेश है और मैंने इसलिए नमाज़ पढ़नी है तो फिर जो बाक़ी अख़लाक़ हैं वे भी पैदा हो जाऐंगे। जब आप नमाज़ पढ़ते हुए अल्लाह तआला से اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ की दुआ करेंगे तो यह दुआ जब दिल से निकलेगी तो वह यह होगी कि अल्लाह तआला आप को रुहानी मुआमलों में भी الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ पर चलाए, सही गाईड करता रहे और आप सही रस्ता से उधर deviate न करें। और जो अख़लाक़ीयात अल्लाह तआला ने बताए हुए हैं, जो अल्लाह की शिक्षा है उसके ऊपर भी सही चलते हैं। और जब إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ कहेंगे तो ज़ाहिर है कहेंगे कि हे अल्लाह तआला हम तेरी ही इबादत करना चाहते हैं और तुझसे ही सहायता मांगते हैं, हमारी सहायता कर, हमें उन लोगों से बचा ले जिन को तू ने सज़ा दी और जो सही रास्ते से फिर गए। तो इस की रहमानियत मांगें, उसकी रहीमियत मांगें। और फिर जब संजीदगी से नमाज़ पढ़ रहें होंगे तो केवल दुनिया ही की बातें न मांगें, अगले जहान की भी बातें मांगें। एक ख़ादिम जब संजीदगी से नमाज़ पढ़ लेगा तो समझ लें कि उसने सब कुछ कर लिया।

प्रश्न: एक महिला ने महिलाओं के बाल कटवाने और उन बालों को कैंसर के किसी ग़ैर मुस्लिम मरीज़ को donate करने के बारे में हज़रत अमीरुल मोमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़िदमत अक़्दस में इस्तिफ़सार किया। हुज़ूर अनवर ने अपने पत्र दिनांक 25 दिसंबर 2019 ई. में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर दिया :

उत्तर : ज़रूरत पड़ने पर महिलाओं के बाल कटवाने में कोई हर्ज नहीं। इसलिए हज और उमरा की तकमील पर महिलाएं अपने बाल काट कर ही एहराम खौलती हैं। हदीस में आता है कि सहाबियात ज़रूरत पड़ने पर अपने बाल कटवाया करती थीं। जबकि महिलाओं को हलक़ अर्थात सिर मुंडवाने की आज्ञा नहीं। इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मर्दों को महिलाओं की और महिलाओं को मर्दों के तरह समानता इख़्तियार करने से मना फ़रमाया है। अत: महिलाओं को मर्दों के ढंग पर बाल नहीं कटवाने चाहिएं। लेकिन यदि ज़ीनत की ख़ातिर मुनासिब हद तक बाल कटवाए जाएं जिसमें मर्दों से मुशाबहत पैदा न होती हो तो इस में कोई हर्ज नहीं।

किसी मरीज़ को बाल donate करना सवाब का काम है। इस में कोई हर्ज की बात नहीं क्योंकि जब ईलाज के सिलसिले में एक इन्सान दूसरे इन्सान को अपना ख़ून और अन्य अंग बतौर अतीया दे सकता है तो बाल क्यों नहीं दे सकता।

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर पी. ऐस लंदन)

(धन्यवाद सहित अख़बार अल् फ़ज़ल इंटरनैशनल 12 मार्च 2021 ई.) शेष.....

★ ★ ★

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045

e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ
الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ○ (النحل 11)

Prop : Sk. Ishaque

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FFT Fruits

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS

All India Truck Supplier

Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile
09937238938

محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON

snapdeal.com flipkart.com
amazon.com paytm

Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com

We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com

DECO DL LEATHERS

Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝
(سورہ بنی اسرائیل آیت 31)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

क्या ही सौभाग्यशाली हैं वे लोग

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "क्या ही सौभाग्यशाली हैं वे लोग जो अपने हृदयों को हर दोष से पवित्र कर लेते हैं और अपने ख़ुदा से वफ़ादारी का दृढ़ सकंल्प करते हैं, क्योंकि वे कदापि व्यर्थ नहीं किए जाएँगे। संभव नहीं कि परमेश्वर उनको अपमानित होने दे क्योंकि वे ख़ुदा के हैं और ख़ुदा उनका, वे प्रत्येक आपदा और विपदा के समय सुरक्षित रखे जाएँगे। मूर्ख है वह शत्रु जो उनको अपनी शत्रुता का लक्ष्य बनाए, क्योंकि वे ख़ुदा की गोद में हैं और ख़ुदा उनका सहायक है। **ख़ुदा पर किसकी आस्था है?** केवल उन्हीं की जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। इसी प्रकार वह मनुष्य भी मूर्ख है जो एक मुँहफट, पापी, दुष्ट, दुराचारी के अधीन है क्योंकि उसका स्वयं विनाश होगा। ख़ुदा ने जब से धरती और आकाश की रचना की कभी ऐसा अवसर नहीं आया कि उसने सज्जन पुरुषों को नष्ट कर दिया हो, अपितु वह उनके लिए बड़े-बड़े कार्यों का प्रदर्शन करता रहा है और अब भी करेगा। वह ख़ुदा असीम वफ़ादार है, और वफ़ादारों के लिए उसके अदभुत कार्य प्रदर्शित होते हैं। दुनिया चाहती है कि उनको मिटा दे और प्रत्येक शत्रु उन पर दांत पीसता है परन्तु ख़ुदा जो उनका मित्र है, प्रत्येक विनाश से उनकी रक्षा करता हैं, प्रत्येक मैदान में उनको विजय प्रदान करता है। वह मनुष्य बड़ा सौभाग्यशाली है जो उस ख़ुदा का **दामन न छोड़े।** हमने उसे स्वीकार किया और पहचाना। समस्त संसार का **वही ख़ुदा है** जिसने मुझे अपनी वाणी से गौरवान्वित किया, मेरे लिए **अलौकिक निशान** प्रकट किए, जिसने मुझे इस युग के लिए **मसीह मौऊद** बनाकर भेजा।" (पुस्तक: कश्ती नूह)